

केरलपाठावलि: संस्कृतम्

पञ्चमी कक्ष्या

अक्कादमिक - संस्कृतविद्यालयानां कृते

KERALA READER - SANSKRIT

Standard V

For Academic & Sanskrit Schools only



**Government of Kerala
Department of Education**

Prepared By

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING - KERALA

2016

राष्ट्रगीतम्

जनगण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्यविधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड उत्कल बंगा।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छलजलधि तरंगा।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्यविधाता।
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे।

प्रतिज्ञा

भारतं मम राष्ट्रम्। सर्वे भारतीयाः मे भ्रातरः। अहं
मम राष्ट्रे स्निह्यामि। तस्य समृद्धायां नानाविधायां च
पूर्विकसम्पत्तौ अभिमानी च भवामि। तद्योग्यतां
सम्पादयितुं सदा यतिष्ये च।

अहं पितरौ गुरुंश्चादरिष्ये, बहुमानयिष्ये च। विनयान्वित
एवाहं सदा सर्वैः सह व्यवहरिष्ये, सर्वेषु प्राणिषु
दयालुर्वर्तिष्ये च।

मम राष्ट्राय राष्ट्रियेभ्यश्चाहं समर्पये स्वसेवाम्।
राष्ट्रियाणां योगक्षेमैश्वर्येष्वेवाहम् आत्मनस्तोषं कलयामि।

State Council of Educational Research and Training (SCERT)

Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala

Website : www.scertkerala.gov.in

e-mail : scertkerala@gmail.com

Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869

Typesetting and Layout : SCERT

First Edition : 2014, Reprint : 2016

Printed at : KBPS, Kakknad, Kochi-30

© Department of Education, Government of Kerala

मूमिका।

आधुनिकविद्याभ्यासप्रक्रियासु नूतनाशयानां सन्निवेशः प्रकटो दृश्यते। शिशोः समग्रं विकासं (शारीरिकं, मानसिकं, बौद्धिकं) लक्ष्यीकृत्यैव एषामाशयानां प्रवृत्तिः प्रचलति। अत एव पाठ्यपुस्तकरचनायां महती श्रद्धा निक्षिप्यते शिक्षाशास्त्रज्ञैः केरलराज्यशासकैश्च।

अधीतिः, बोधः, आचरणं, प्रचारणं चेति चतुर्धा विभक्ता विद्याभ्यासप्रक्रिया। एतत्फलप्राप्तये कालानुकूलं परिष्करणमपि आवश्यकम् अस्ति। शिशुमनःशास्त्रम् अनुसृत्यैव पाठ्यपुस्तकरचना कृता। तदर्थम् उपयोगिनी भवति परिष्कृता पाठ्यपद्धतिः। भारत देशीयपाठ्यपद्धतिः मूल्यनिर्णयोपाधींश्च उपजीव्यैव निर्मितमिदं पाठ्यपुस्तकम्।

प्रथमं पाठभागः, तदनु पठनप्रवर्तनानि, ततः अनुबन्धश्चेति क्रम एव सर्वेषु पाठेषु स्वीकृतः। कथापूरणं, गानालापनम्, अभिनयः इत्यादीनि शिशुकेन्द्रीकृतानि मानसिकविकासोल्लासप्रदानि पठनप्रवर्तनानि अत्र समायोजितानि विद्यन्ते। कैरल्यां प्रचुरतया प्रचरितानि संस्कृतपदानि एव अस्मिन् पुस्तके अधिकतया प्रयुक्तानि। एवं च संस्कृतभाषां प्रति छात्रेषु आभिमुख्यं जनयितुं कथाः, गीतानि, सुभाषितादीनि च अत्र आयोजितानि सन्ति। सरलया रीत्या भाषाप्रयोगसामर्थ्यं सम्पादयितुम् अनेन छात्राः शक्ताः भवेयुः।

राज्यशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः नेतृत्वे, अध्यापकानाम्, विद्याभ्यासविचक्षणानां च कठिनपरिश्रमस्य फलमेवेदं पाठ्यपुस्तकम्।

पठनोपकरणेष्वन्यतमम् एतत् पुस्तकं विद्यार्थिनां स्वयंपठनाय सहायकं भवति। नूतनमिदं पाठ्यपुस्तकं विद्याकुतुकिनां हस्तेषु समर्पयन्नहं नितरां निर्वृतिमनुभवामि।

पाठ्यपुस्तकमिदं लक्ष्यसाधकं कर्तुं भवदीयानामपि निर्देशान् सादरं प्रार्थये।

भवदीयः

डा० पी.ए. फत्तिमा

निदेशकः

राज्यशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्, केरलाः।

अनन्तपुरी

TEXT BOOK DEVELOPMENT COMMITTEE
SANSKRIT - ACADEMIC - STANDARD V

Participants

- K. Ambika kumari**, Namboodiris College of Teacher Education, Iringalakkuda, Thrissur (Dt)
J. Sureshkumar, SNUPS Kollayil, Kollayil.P.O, Madathara, Palode
N. Aravindakshan, Govt. UPS Mangaram, Pandalam.P.O, Pathanamthitta.
K.R. Ramachandran, AUPS Muriyad, Thrissur (Dt)
K V Rajeesh, Govt. UP School, Kuttikkattukara, Aluva, Ernakulam
C.P. Ajimon, Govt. UPS, Kavanad, Kavanad.P.O, Kollam
P. Malathi, GHSS, Edapal, Edapal.P.O, Malappuram Dt
Sreeja, Arumanoor HS, Arumanoor.P.O, Thiruvananthapuram
T.K Santhosh kumar, Karunaram AUP school, Nanminda, Kozhikkod

Artists

- Balakrishnan Achari. P.G**, Lecturer in Art Education, DIET (Rtd)
B.Aravindan, Puthuparambil, Gandhinagar, Kottayam.

Experts

- Dr. Kamalakumari**, Associate Professor, SSUS Regional Centre, Vanchiyoor, Thiruvananthapuram
Dr. T.K. Radhalekshmi, Sreevalsam, Kera B-19, Kundamanbhagam, Peyad.P.O, Thiruvananthapuram
Dr. T.D. Suneethi Devi, Spl. Officer (Sanskrit) DPI, Jagathy, Thiruvananthapuram

Advisor

- Prof.R.Vasudevan potti**, Prof. (Rtd), Sivadhamam, Sreekandeswaram, Thiruvananthapuram

Academic Co - Ordinator

- Dr. Kerala Sreemathi. T**, Research Officer (Sanskrit), SCERT.



राज्यशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् - केरला:

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING - KERALA

विषयानुक्रमणिका ।

| क्रमसंख्या | पाठस्य नाम | व्यवहाररूपम् | पुटसंख्या |
|------------|-----------------------|--------------|-----------|
| १ | सुन्दरोऽयं जीवलोकः | बालकविता | 6 - 17 |
| २ | संस्कृतोत्सवः | संभाषणपाठः | 18 - 24 |
| ३ | सामोदं सम्मिलामः | विवरणम् | 25 - 33 |
| ४ | एष धर्मः सनातनः | पद्यम् | 34 - 39 |
| ५ | सुन्दरं भवनम् | विवरणम् | 40 - 46 |
| ६ | धर्मनिष्ठो युधिष्ठिरः | चित्रकथा | 47 - 54 |
| ७ | संस्कृतं लोकरञ्जकम् | बालगीतम् | 55 - 57 |
| ८ | अकृत्यं नैव कर्तव्यम् | कथा | 58 - 63 |
| ९ | गीतामृतम् | सूक्तानि | 64 - 70 |
| १० | जीयाद् गीर्वाणभारती | उपन्यासः | 71 - 75 |
| ११ | दशमस्त्वमसि | कथा | 76 - 79 |

प्रथमः पाठः

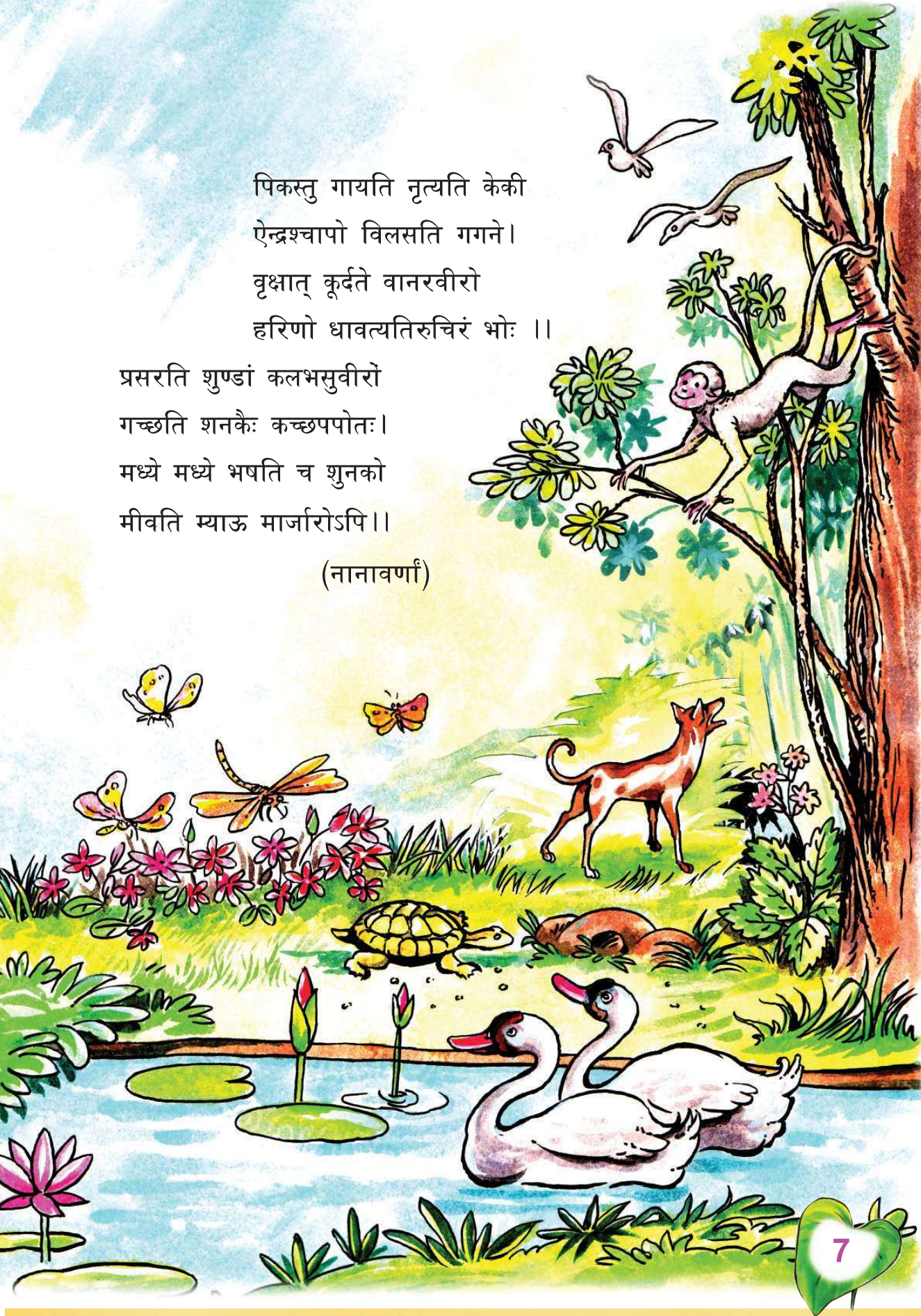
सुन्दरोऽयं जीवलोकः

नानावर्णां प्रकृतिं पश्यतु
तव मम चित्तं हरति च नित्यम्।
श्रुत्वा मर्मरनादं सर्वे
निवसन्त्येवं मोदसमेतम्॥

पिकस्तु गायति नृत्यति केकी
ऐन्द्रश्चापो विलसति गगने।
वृक्षात् कूर्दते वानरवीरो
हरिणो धावत्यतिरुचिरं भोः ॥

प्रसरति शुण्डां कलभसुवीरो
गच्छति शनकैः कच्छपपोतः।
मध्ये मध्ये भषति च शुनको
मीवति म्याऊ मार्जारोऽपि ॥

(नानावर्णा)

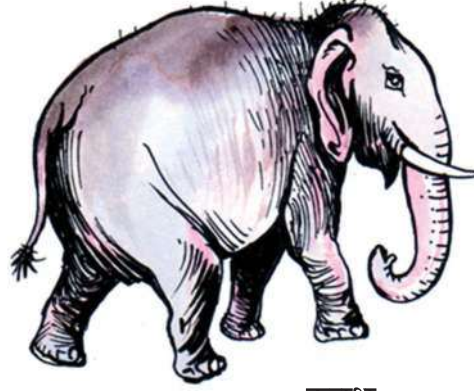


किं करणीयम् ?

- बालकवितां सतालम् आलपतु।
- चित्राणि दृष्ट्वा नामानि वदतु।



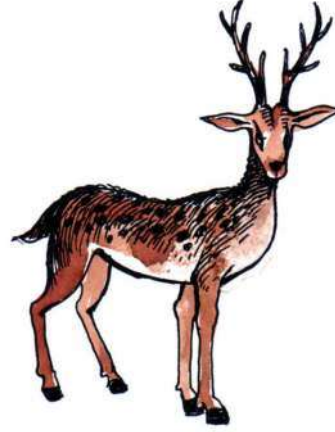
काकः



कलभः



वानरः



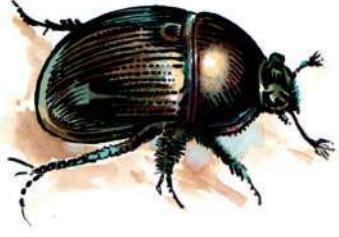
हरिणः



मार्जारः



शुनकः



भ्रमरः



सूनम्



पर्णम्



अम्बा



माला



लता



फलम्



आम्रम्



पुस्तकम्

❖ चित्राणि पश्यतु - वदतु।



बालकः



बालकौ



बालकाः



बालिका



बालिके



बालिकाः



फलम्



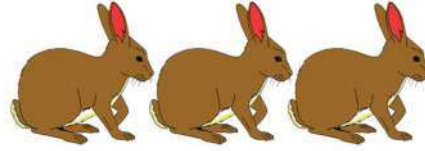
फले



फलानि

❖ समुचितं पदं चित्वा चित्रस्य अधः लिखतु ।

(कमलम्, शशकः, महिला, कमले, शशकौ, कमलानि, महिले, शशकाः, महिलाः)



❖ लिङ्गानुसारं पट्टिकां करोतु।

(भ्रमरः, फलम्, कोकिलः, नौका, कच्छपः, शुण्डा, चन्दनम्,
तूलिका, वृक्षः, पुस्तकम्, पर्णम्, वनिता, चित्रम्, चापः)

| पुंलिंगः | स्त्रीलिंगः | नपुंसकलिंगः |
|----------|-------------|-------------|
| कच्छपः | शुण्डा | चित्रम् |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

❖ चित्राणि दृष्ट्वा वाक्यानि वदतु।



बालिका पठति।



बालकः लिखति।



महिला नृत्यति।



शुनकः भषति ।



शशकः धावति ।



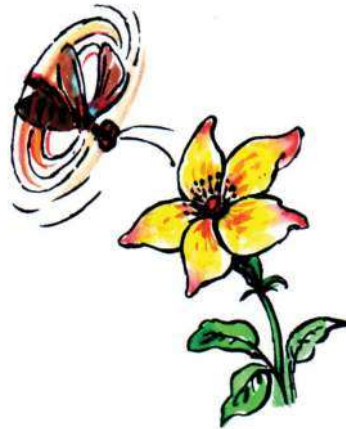
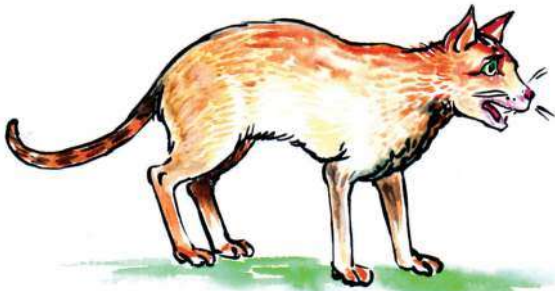
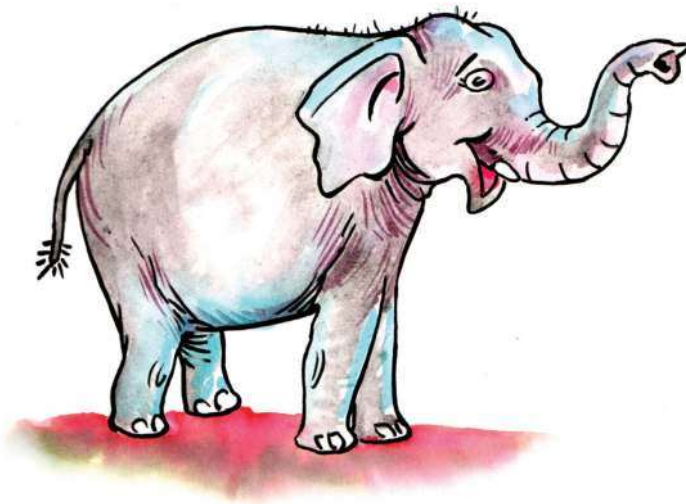
गायकः गायति ।



सूनं विकसति ।

❖ बालकवितां पठित्वा चित्रानुसारं पूरयतु ।





अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नटम् | आङ्गलम् |
|--------------|------------|-------------------|--------------------|----------------|
| अतिरुचिरम् | अतिमनोहरम् | വളരെ മനോഹരം | ಆತಿಸುಂದರವಾದ | very beautiful |
| अनिशम् | निरन्तरम् | എല്ലായ്പ്പോഴും | ಯಾವಾಗಲೂ | always |
| अम्बा | माता | അമ്മ | ಅಮ್ಮ | mother |
| अयम् | एषः | ഇദ്ദേഹം, ഇവൻ | ಇದು, ಇವನು | This man |
| आम्रम् | आम्रफलम् | മാമ്പഴം | ಮಾವಿನಹಣ್ಣು | mango |
| एवम् | इत्थम् | ഇപ്രകാരം | ಈ ರೀತಿ | thus |
| ऐन्द्रश्चापः | इन्द्रधनुः | മഴവില്ല് | ಕಾಮನಬಿಲ್ಲು | rainbow |
| कच्छपः | कूर्मः | ആമ | ಆಮೆ | tortoise |
| कलभः | गजशाबकः | ആനക്കുട്ടി | ಆನೆಯ ಮರಿ | Baby elephant |
| काकः | वायसः | കാക്ക | ಕಾಗೆ | crow |
| कूर्दते | प्लवते | ചാടുന്നു | ಹಾರುತ್ತದೆ | Jumps |
| केकी | मयूरः | മയിൽ | ನವಿಲು | Peacock |
| गगनः | आकाशम् | ആകാശം | ಆಕಾಶ | sky |
| गच्छति | चलति | പോകുന്നു | ಹೋಗುತ್ತಾನೆ/ಳಿದೆ | goes |
| गायति | गायति | പാടുന്നു | ಹಾಡುತ್ತಾನೆ/ಳಿದೆ | sings |
| गुञ्जति | गुञ्जति | മുരളുന്നു | ಗುಂಜಾರವಮಾಡುತ್ತದೆ | humming |
| तूलिका | लेखनी | പേന | ಪೆನ್ನು | Pen |
| धावति | धावति | ഓടുന്നു | ಓಡುತ್ತಾನೆ/ಳಿದೆ | runs |
| नयनम् | नेत्रम् | കണ്ണ് | ಕಣ್ಣು | eye |
| नितराम् | अत्यन्तम् | വളരെയധികം | ಅತ್ಯಂತ | too much |
| निवसति | वसति | വസിക്കുന്നു | ವಾಸಿಸುತ್ತಾನೆ/ಳಿದೆ | lives |
| नित्यम् | सदा | എപ്പോഴും | ಯಾವಾಗಲೂ | always |
| नृत्यति | नृत्यति | നൃത്തം ചെയ്യുന്നു | ನರ್ತಿಸುತ್ತಾನೆ/ಳಿದೆ | dances |
| पठति | वाचयति | വായിക്കുന്നു | ಓದುತ್ತಾನೆ/ಳಿದೆ | reads |



| | | | | |
|-----------|------------|-----------------------------|------------------------|----------------------|
| पर्णम् | पत्रम् | ഇല | ಎಲೆ | leaf |
| परितः | सर्वतः | ചുറ്റും | ಸುತ್ತಲೂ | around |
| कोकिलः | पिकः | കുയിൽ | കോകിലೆ | cuckoo |
| प्रसारयति | व्यापयति | നീട്ടുന്നു | ಹರಡುತ್ತದೆ | extends |
| मध्ये | अन्तरा | ഇടയിൽ | ಮಧ್ಯದಲ್ಲಿ | in between |
| महिला | वनिता | സ്ത്രീ | ಮಹಿಳೆಯು | woman |
| मार्जारः | बिडालः | പൂച്ച | ಬೆಕ್ಕು | cat |
| माला | हारः | മാല | ಮಾಲೆ | garland |
| मीवति | मीवति | പൂച്ചശബ്ദം ഉണ്ടാക്കുന്നു | ಬೆಕ್ಕು ಕೂಗುತ್ತದೆ | mews |
| मोदः | सन्तोषः | സന്തോഷം | ಸಂತೋಷವು | pleasure |
| रुचिरम् | मनोहरम् | സുന്ദരം | ಸುಂದರವಾದ | beautiful |
| लता | वल्ली | വള്ളി | ಲತೆ | creeper |
| वानरः | मर्कटः | കുരങ്ങൻ | ಮಂಗನು | monkey |
| विकसति | विकचति | വീടുന്നു | ಅರಳುತ್ತದೆ | blossoms |
| विलसति | शोभते | ശോഭിക്കുന്നു | ಶೋಭಿಸುತ್ತದೆ | shines |
| विहरति | क्रीडति | കളിക്കുന്നു | ಸುಖವಾಗಿ ತಿರುಗಾಡುತ್ತಾನೆ | plays |
| वीरः | धीरः | വീരൻ | ಶೂರನು | courageous/ brave |
| वृक्षः | पादपः | മരം | ಮರವು | tree |
| शनकैः | मन्दम् | മെല്ലെ | ಮೆಲ್ಲನೆ | slowly |
| शशकः | शशः | മുയൽ | ಮೊಲವು | rabbit |
| शुण्डा | गजहस्तः | തൃന്വിക്കൈ | ಸೊಂಡಿಲು | trunk |
| शुनकः | कुक्कुरः | നായ | ನಾಯಿಯು | dog |
| समेतम् | सहितम् | കൂടെ | ಜೊತೆಗೆ | with |
| हरिणः | मृगः | മാൻ | ಬಿಂಕೆ | deer |
| हरितम् | वर्णविशेषः | പച്ചനിറം | ಹಸಿರು ಬಣ್ಣ | green colour |



शब्दरूपाणि

अकारान्तः पुल्लिङ्गः 'बाल' शब्दः ।

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|---------|-----------|-----------|
| प्र. | बालः | बालौ | बालाः |
| सं. प्र. | हे बाल! | हे बालौ! | हे बालाः! |
| द्वि. | बालं | बालौ | बालान् |
| तृ. | बालेन | बालाभ्यां | बालैः |
| च. | बालाय | बालाभ्यां | बालेभ्यः |
| प. | बालात् | बालाभ्यां | बालेभ्यः |
| ष. | बालस्य | बालयोः | बालानाम् |
| स. | बाले | बालयोः | बालेषु। |

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|------------------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | बालकविता सतालम् आलपिता। | | | | |
| 2. | चित्राणि दृष्ट्वा नामानि उक्तानि। | | | | |
| 3. | चित्रं वीक्ष्य उक्तम्। | | | | |
| 4. | समुचितं पदं चित्वा चित्रस्य अधः लिखितम्। | | | | |
| 5. | लिङ्गानुसारं पट्टिका कृता। | | | | |
| 6. | चित्राणि दृष्ट्वा वाक्यानि उक्तानि। | | | | |
| 7. | बालकवितां पठित्वा चित्रानुसारं पूरितम्। | | | | |

*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



द्वितीयः पाठः संस्कृतोत्सवः

(अध्यापकः कक्ष्यां प्रविशति।)

छात्राः- (उत्थाय) नमो गुरुभ्यः।

अध्यापकः- नमो नमः। सुप्रभातम्। उपविशत। एकं विज्ञापनम् अस्ति। शृण्वन्तु।
(विज्ञापनं पठति।)

प्रियछात्राः,

अस्माकं विद्यालये संस्कृतोत्सवः आगामिनि गुरुवासरे भविष्यति। भागं ग्रहीतुम् इच्छन्तः
नामानि विलिख्य संस्कृताध्यापकस्य हस्ते यच्छन्तु।

इति

अनन्तपुरी।

प्रधानाध्यापकः। (हस्ताक्षरम्।)

०३.०८.२०१४



- विमलः - संस्कृतोत्सवे कति स्पर्धाः सन्ति ?
- अध्यापकः - गानालपनम्, पद्योच्चारणम्, नाटकम् इत्यादयः नवदश प्रतियोगिताः भवेयुः।
- जोसफः - नाटके मम नाम योजयतु।
- अध्यापकः - नाटके दश छात्राः अपेक्षिताः। सोमवासरात् पूर्वं नामानि विलिख्य यच्छन्तु।
- आतिरा - गुरो! गानालपने राधिकायाः नाम योजयतु।
- रमीसः - सम्यक्। सा गानालपने अतिनिपुणा।
- अध्यापकः - आम्, राधिका कुत्र ?
- छात्राः - सा अद्य न आगता।
- अध्यापकः - किम् अभवत् ?
- विवेकः - सा ज्वरेण पीडिता भवति।
- अध्यापकः - अस्तु, हे विवेक! कार्यमिदम् अद्यैव राधिकां निवेदय।
- विवेकः - आम्। निवेदयामि।
- अध्यापकः - भोः छात्राः! सर्वे संस्कृतोत्सवाय सज्जाः भवन्तु।
- छात्राः - (सोत्साहं) बाढम्।



किं करणीयम् ?

❖ संभाषणं कक्ष्यायां पात्रानुसारम् अवतारयतु ।

❖ अध्यापकस्य निर्देशानुसारं विवेकः राधिकायाः गृहं गच्छति । तयोः मिथः भाषणम् अधः दत्तमस्ति । कोष्ठकात् समुचितं पदं चित्वा रिक्तांशान् पूरयतु ।

(नाटके, आगच्छतु, नमस्ते, विद्यालयम्,)

राधिका - नमस्ते ! हे विवेक! आगच्छ ।

विवेकः -। किं ज्वरः शान्तः?

राधिका - आम् शान्तः।

विवेकः - श्वः आगमिष्यसि वा ?

राधिका - न हि । अपि कश्चित् विशेषः विद्यालये ?

विवेकः - आम् । विशेषोऽस्ति । आगामिनि गुरुवासरे विद्यालये संस्कृतोत्सवः भविष्यति ।

राधिका - अस्तु! त्वं भागं करोषि किम् ?

विवेकः - आम् । अहं पद्योच्चारणे च नाम अयच्छम् । सोमवासरात् पूर्वं नाम दातव्यम् ।

राधिका - एवं वा ? । गानालपने मम नामापि योजयतु ।

विवेकः - आम् । सोमवासरे ध्रुवं..... ।

राधिका - धन्यवादः । बाढम् आगमिष्यामि ।

विवेकः - पुनर्मिलावः ।



❖ सूचनानुसारं सम्बोधनरूपाणि योजयतु ।

| पदम् । | सम्बोधनम् । |
|---------|-------------|
| रामः | हे राम ! |
| राधिका | हे राधिके ! |
| कृष्णः | |
| मोहनः | |
| देविका | |
| मल्लिका | |
| बालः | |
| बालिका | |
| रमा | |
| देवः | |

❖ उदाहरणं पठित्वा पट्टिकां पुरयतु ।

उदा

| लट् | लोट् |
|-----------|----------|
| :प्रविशति | प्रविशतु |
| | योजयतु |
| भवति | |
| | नृत्यतु |
| गायति | |
| | यच्छतु |
| वदति | |
| | लिखतु |
| | पठतु |



❖ अधोदत्तानि चित्राणि निरीक्ष्य प्रश्नानाम् उत्तराणि वदतु, लिखतु।



बालकः किं पठति ?



बालिका कुत्र
गच्छति ?



मातामही कां वदति ?



पुरुषः कां पश्यति ?

❖ कोष्ठके दत्तस्य पदस्य उचितं रूपम् उपयुज्य पूरयतु।

उदा- अजपालः अजं नयति (अजः)।

माता————— वदति। (बालिका)

चालकः ————— चालयति। (यानं)

भक्तः ————— गच्छति। (देवालयः)

❖ उच्चैः पठतु।

रविवारः

गुरुवारः

सोमवारः

शुक्रवारः

मंगलवारः

शनिवारः

बुधवारः



❖ पूरयतु

| | | | | |
|--------|------|----------|------|--------|
| परह्यः | ह्यः | अद्य | श्वः | परश्वः |
| | | बुधवासरः | | |

अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नटम् | आङ्गलम् |
|------------|----------------|--------------------------|-----------------|--------------------|
| अद्य | अस्मिन् दिने | ഇന്ന് | ಇಂದು | Today |
| आगामिनि | उपगामि | വരുന്ന | ಮುಂದಿನ | Next |
| इच्छति | अभिलषति | ആഗ്രഹിക്കുന്നു | ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತಾನೆ | Wish, Hope |
| उत्तमम् | श्रेष्ठम् | നല്ലത് | ಉತ್ತಮ | Good |
| ज्वरः | रोगविशेषः | പനി | ಜ್ವರ | Fever |
| परश्वः | परश्वः | മറ്റനാൾ | ನಾಡಿದ್ದು | Day after tomorrow |
| पीडिता | दुःखिता | വിഷമം അനുഭവിക്കുന്നവൾ | ದುಃಖಿತಳು | Suffering |
| पूर्व | प्रथमतया | മുമ്പ് | ಮೊದಲು | Before |
| प्रविशति | प्रवेशनं करोति | പ്രവേശിക്കുന്നു | ಪ್ರವೇಶಿಸುತ್ತಾನೆ | Enter |
| यच्छति | ददाति | നൽകുന്നു | ಕೊಡುತ್ತಾನೆ | Give |
| विज्ञापनम् | विज्ञप्तिः | അറിയിപ്പ് | ಸೂಚನೆ | Notice |
| श्वः | श्वः | നാളെ | ನಾಳೆ | Tomorrow |
| समक्षम् | पुरतः | മുമ്പിൽ | ಎದುರಿನಲ್ಲಿ | Infront of |
| स्पर्धा | प्रतियोगिता | മത്സരം | ಸ್ಪರ್ಧೆ | Competition |
| ह्यः | ह्यः | ഇന്നലെ | ನಿನ್ನೆ | Yesterday |

धातुरूपाणि

वद् व्यक्तायां वाचि, धातुः परस्मैपदी लोट्

(विधिः, आशीः, प्रार्थना)

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|--------------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | वदतु/ वदतात् | वदताम् | वदन्तु |
| मध्यमपुरुषः | वद/वदतात् | वदतम् | वदत |
| उत्तमपुरुषः | वदानि | वदाव | वदाम । |



शब्दरूपाणि

आकारान्तः स्त्रीलिंगः लता शब्दः ।

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---------------|----------|-----------|----------|
| प्रथमा | लता | लते | लताः |
| संबोधन प्रथमा | हे लते ! | हे लते ! | हे लताः |
| द्वितीया | लताम् | लते | लताः |
| तृतीया | लतया | लताभ्याम् | लताभिः |
| चतुर्थी | लतायै | लताभ्याम् | लताभ्यः |
| पञ्चमी | लतायाः | लताभ्याम् | लताभ्यः |
| षष्ठी | लतायाः | लतयोः | लतानाम् |
| सप्तमी | लतायाम् | लतयोः | लतासु । |

एवम् - शाखा - राधिका - भाषादयः शब्दाः ।

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु ।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|------------------------------------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | पाठभागः अवतारितः । | | | | |
| 2. | संभाषणं समुचितेन पदेन पूरितम् । | | | | |
| 3. | संबोधनरूपाणि योजितानि । | | | | |
| 4. | पट्टिका पूरिता । | | | | |
| 5. | चित्राणि निरीक्ष्य प्रश्नानाम् उत्तराणि उक्तानि लिखितानि । | | | | |
| 6. | उचितेन रूपेण पूरितम् । | | | | |
| 7. | वासराणां नामानि उच्चैः पठितानि । | | | | |
| 8. | वासराणां नामानि निवेशितानि । | | | | |

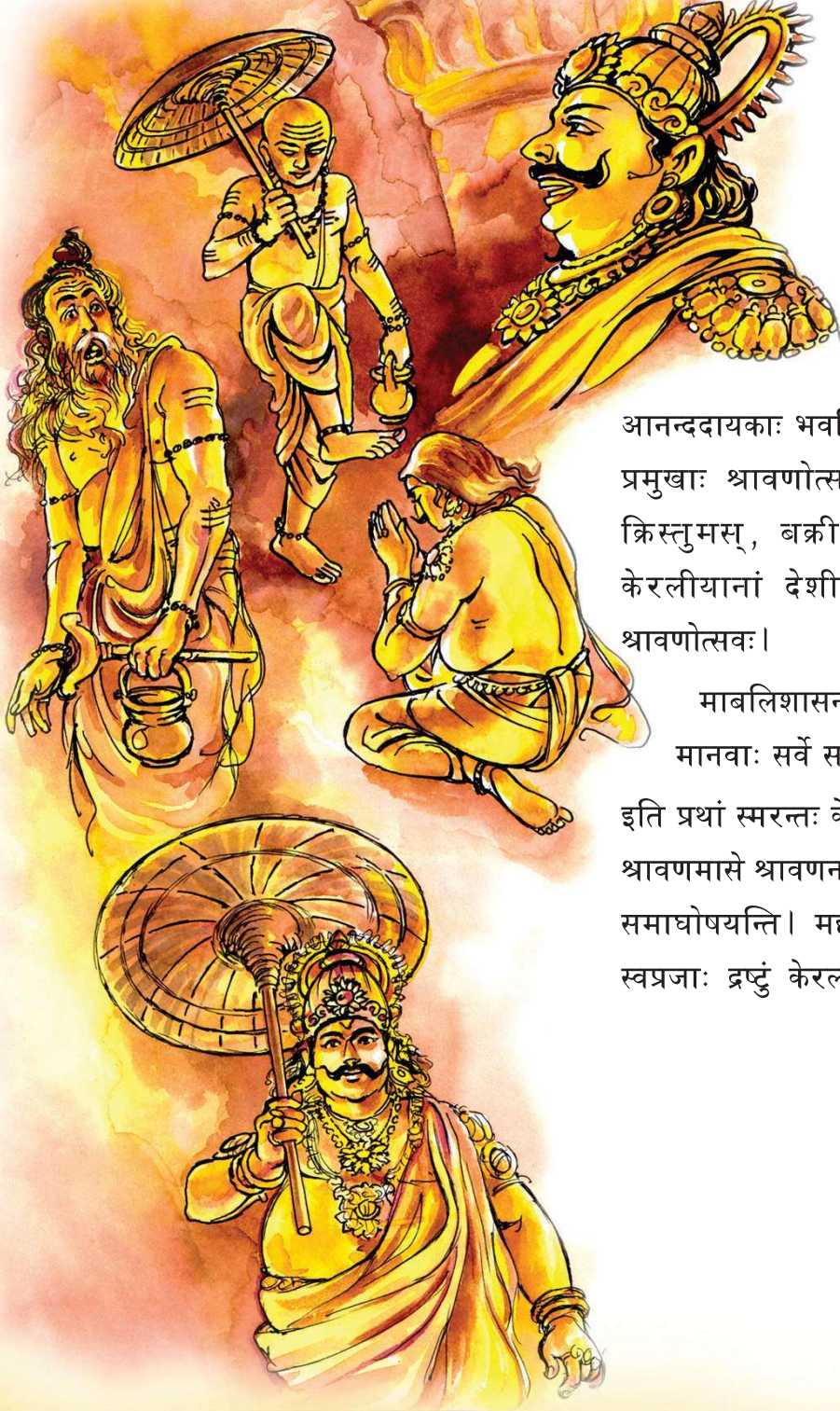
*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



तृतीयः पाठः

सामोदं सम्मिलामः



आनन्ददायकाः भवन्ति उत्सवाः। तेषु
प्रमुखाः श्रावणोत्सवः, दीपावलिः,
क्रिस्तुमस्, बक्रीद् एवमादयः।
केरलीयानां देशीयोत्सवः भवति
श्रावणोत्सवः।

माबलिशासनकाले देशे
मानवाः सर्वे समाना एव ।

इति प्रथां स्मरन्तः केरलीयाः प्रतिवर्षं
श्रावणमासे श्रावणनक्षत्रे इमम् उत्सवं
समाघोषयन्ति। महाबलिः प्रतिवर्षं
स्वप्रजाः द्रष्टुं केरलानागच्छति इति



ऐतिह्यमस्ति । हस्तनक्षत्रादारभ्य जनाः नानावर्णैः
 पुष्पैः गृहाङ्कणेषु पुष्पकोष्ठाणि रचयन्ति ।
 श्रावणोत्सवदिने सर्वे नूतनवस्त्राणि धरन्ति ।
 बन्धुजनैः सह सग्धिम् अनुभवन्ति, मोदन्ते च ।
 बालाः श्रावणगीतं गायन्ति । क्रीडाभिः तुष्यन्ति ।
 जनाः नौकाकेलिः, आर्द्राकेलिः, दोलान्दोलनम्
 इत्यादिभिः विविधाभिः केलिभिः सामोदं समयं
 यापयन्ति । श्वेतपीतरक्तादिभिः नानावर्णैः पुष्पैः
 शलभैः च प्रकृतिः अपि मनोहरा भवति ।
 सर्वकाराः श्रावणोत्सवकार्यक्रमानपि
 आयोजयन्ति । इमम् उत्सवं समभावनया
 आबालवृद्धं सर्वेऽपि आघोषयन्ति ।



किं करणीयम्

❖ उदाहरणानुसारं पदच्छेदं लिखतु।

इत्यारम्भः - इति + आरम्भः ।

इत्यादयः -

❖ पाठभागात् तृतीयाविभक्तिरूपाणि चित्वा लिखतु।

❖ अधोदत्तानि पदानि पठित्वा वचनानुसारं पट्टिकारूपेण लिखतु ।

सन्ति भवति आघोषयन्ति लिखति गायतः
रचयन्ति धरन्ति गायति आचरति पठति

❖ नामपदानि क्रियापदानि च विविच्य लिखतु।

जनाः गायन्ति उत्सवाः भवति दीपावलिः रचयन्ति
धरन्ति प्रकृतिः वस्त्राणि

| क्रियापदानि | नामपदानि |
|-------------|----------|
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

अक्षरमाला

स्वराः

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ऐ ओ औ अं
अः ।



व्यञ्जनानि

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क | ख | ग | घ | ङ |
| च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण |
| त | थ | द | ध | न |
| प | फ | ब | भ | म |
| | य | र | ल | व |
| | श | ष | स | ह |

स्वरचिह्नानि

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|----|---|----|----|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | । | इ | ि | ई | ी | उ | ु | ऊ | ू | ऋ | ृ |
| ऋ | ृ | लृ | ए | े | ऐ | ौ | ो | | | | | |
| औ | ौ | अं | ँ | अः | ः। | | | | | | | |

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः ।

स्वरव्यञ्जनयोगः

| | | | | | |
|----------|---|-----|---------|---|------|
| त् + अ | = | त | त् + आ | = | ता |
| त् + इ | = | ति | त् + ई | = | ती |
| त् + उ | = | तु | त् + ऊ | = | तू |
| त् + ऋ | = | तृ | त् + ॠ | = | तृ |
| त् + ए | = | ते | त् + औ | = | तौ |
| त् + ऐ | = | तै | त् + अः | = | तः । |
| त् + ओ | = | तो | | | |
| त् + अम् | = | तम् | | | |

संयुक्ताक्षराणि

क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ = ज्ञ, श् + र = श्र ।

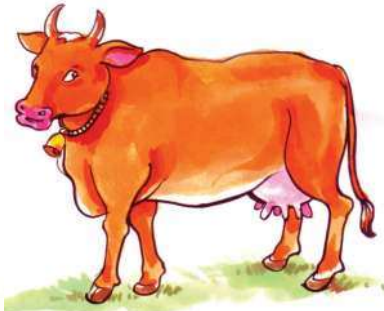
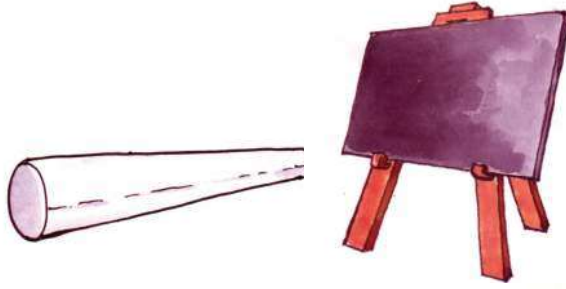


अक्षरमालानुसारं शब्दकोशं रचयतु ।

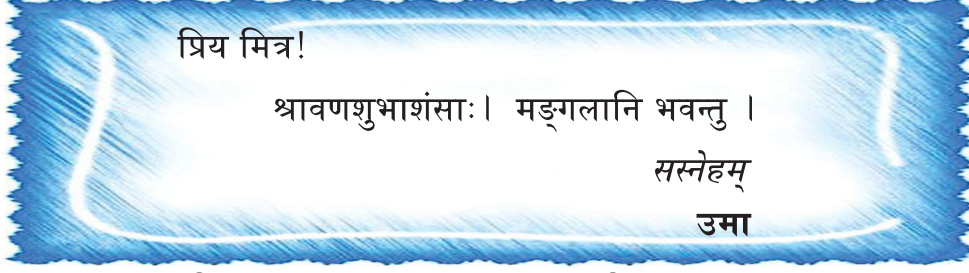
| | | | |
|---------|----------|----------|--------|
| उत्सवाः | जनाः | दीपावलिः | नूतनम् |
| मनोहरम् | ऐतिह्यम् | पर्णम् | भ्रमरः |
| यानम् | शुकः | वानरः | काकः |
| लता | हरिणः | गीतम् | इन्दुः |
| अद्य | सर्वे | एकम् | तिलकम् |

❖ चित्रानुसारं वर्णानां नामानि कोष्ठकात् चित्वा लिखतु ।

| | |
|-----------|------------|
| पीतवर्णः | श्वेतवर्णः |
| हरितवर्णः | श्यामवर्णः |
| रक्तवर्णः | नीलवर्णः |
| कपिशवर्णः | |



❖ आशंसापत्रं पठित्वा कोष्ठकात् इष्टतमं वाक्यं चित्वा अन्यत् आशंसापत्रं लिखतु ।



- | | |
|------------------------|----------------------------|
| १. जन्मदिनाशंसाः । | २. क्रिस्तुमस् आशंसाः । |
| ३. ईदाशंसाः । | ४. स्वातन्त्र्यदिनाशंसाः । |
| ५. गणतन्त्रदिनाशंसाः । | ६. संस्कृतदिनाशंसाः । |

❖ उचितानि पदानि चित्वा कथां पूरयतु । शीर्षकं लिखतु ।

(केरलान्, जनाः, महाबलिः, वामनरूपः, सन्तुष्टाः, भूमिम्, वामनः, त्रिपादमिताम्, सुतलम् ।)

पुरा..... नाम असुरचक्रवर्ती अपालयत् । तस्य शासनकाले सर्वे अपि अभवन् । महाविष्णुः महाबलिम् उपगम्य भूमिम् अयाचत । महाबलेः प्रार्थनामनुसृत्य पादद्वयेन स्वर्गञ्च माति स्म । तृतीयपादविन्यासेन वामनः महाबलिं अनयत् ।

❖ कोष्ठके दत्तस्य पदस्य उचितं रूपमुपयुज्य पूरयतु ।

उदा:- बालः..... सह आगच्छति । (जनकः)
 बालः जनकेन सह आगच्छति ।
 लता सह विद्यालयं गच्छति । (राजेशः)
 सुरेशः सह क्रीडति । (विनोदः)

❖ नौकागानमेकं, कक्षायामवतारयतु ।

ओ तित्तिचारा तित्तिचै तित्ते तक तै तै तोम्
 आगच्छन्तु बाला सर्वे नौकाकेलीदर्शनाय
 आरन्मुला प्रदेशं तु गच्छामो वयम् (ओ तित्तिचारा)
 नौकाकेली रसकरी नौकागानं शृणुयाम
 पश्य पश्य नौकाः सर्वाः गच्छन्ति शीघ्रम् । (ओ तित्तिचारा)
 नदीतीरे कोलाहलो जनानां भाषणं तथा
 अतिमोदं द्रष्टुं तत्र गच्छामो वयम् । (ओ तित्तिचारा)



ಅನುಬಂಧ:

ಶಬ್ದಕೋಶ:

| ಪದಮ್ | ಸಂಸ್ಕೃತಮ್ | ಕೈರಲಿ | ಕನ್ನಡಮ್ | ಆಡ್ಗಲಮ್ |
|--------------|----------------|-----------------|------------------|--------------------|
| ಆಘೋಷಯಂತಿ | ಆಘೋಷಂ ಕುರ್ವಂತಿ | ಊಘೋಷಯಿಕ್ಕುಂ | ಆಚರಿಸುತ್ತಾರೆ | Celebrate |
| ಆರಭ್ಯ | ಪ್ರಾರಭ್ಯ | ಊರಂಟಿಚ್ಚಿಕ್ಕಿ | ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ | having started |
| ಗೃಹಾಡ್ಗಣಮ್ | ಗೃಹಚತ್ವರಮ್ | ವಿತ್ತಿಮ್ಬುಂ | ಮನೆಯಂಗಳ | Courtyard |
| ದ್ರಷ್ಟುಮ್ | ದರ್ಶನಾರ್ಥಮ್ | ಕಾಣ್ತುಂ | ನೋಡಲು | To see |
| ದಾಯಕ: | ದಾತಾ | ನಡುಕ್ಕುಂ | ಕೊಡುವವನು | Giver |
| ಧರಂತಿ | ಧರಂತಿ | ಯಿಕ್ಕುಂ | ಧರಿಸುತ್ತಾರೆ | Wear |
| ನೂತನಮ್ | ನವಮ್ | ಪುತಿಯಲ್ | ಹೊಸ | New |
| ನೌಕಾಕೇಲಿ: | ನೌಕಾಕೇಲಿ: | ವುಡುಂಕುಡಿ | ದೋಣಿಯಾಟ | Boatrace |
| ಪ್ರತಿವರ್ಷಮ್ | ಪ್ರತ್ಯಬ್ದಮ್ | ವರ್ಷಂ ತೊಂಕುಂ | ಪ್ರತಿವರ್ಷವೂ | Every year |
| ಪುಷ್ಪಕೋಷ್ಠಮ್ | ಪುಷ್ಪಚಿತ್ರಮ್ | ಪುಷ್ಪಂ | ಹೂವಿನರಂಗವಲ್ಲಿ | Pookkalam |
| ಪೀತಮ್ | ಪೀತವರ್ಣಮ್ | ಮಣ್ಣುಂ | ಹಳದಿ ಬಣ್ಣ | Yellow |
| ರಚಯಂತಿ | ನಿರ್ಮಾಂತಿ | ರಚಿಕ್ಕುಂ | ರಚಿಸುತ್ತಾರೆ | Create |
| ಸಗ್ಧಿ: | ಸಹಭೋಜನಮ್ | ಸುಬ್ಬ | ಸಹಭೋಜನ | Feast |
| ಸಾಮೋದಮ್ | ಸಸಂತೋಷಮ್ | ಸಂತೋಷತೊಡುಕ್ಕುಡಿ | ಸಂತೋಷದಿಂದ | joyfully |
| ಸಮ್ಮಿಲಾಮ: | ಸಮ್ಮಿಲಾಮ: | ಊಠುಚೊಡುಕ್ಕುಂ | ಒಟ್ಟು ಸೇರುತ್ತೇವೆ | we may assemble |
| ಶಾರ್ದೂಲಕೇಲಿ: | ವ್ಯಾಗ್ರಕ್ರೀಡಾ | ಪುಲಿಕ್ಕುಡಿ | ಪುಲಿಯಾಟ | pulikali |
| ಕಪಿಶವರ್ಣ: | ಕಪಿಶವರ್ಣ: | ಕಪಿತ್ತಿಂ | ಪಚ್ಚೇಕೇಪುಬಣ್ಣ | Brown colour |



अधिकवाचनांशः

शकसंवत्सरानुसारं ऋतूनां मासानां च नामानि ।

| ऋतूनां नामानि | मासनामानि |
|---------------|-------------------|
| वसन्तः | चैत्रः, वैशाखः |
| ग्रीष्मः | ज्येष्ठः, आषाढः |
| वर्षाः | श्रावणः, भाद्रपदः |
| शरद् | आश्विनः, कार्तिका |
| हेमन्तः | मार्गशीर्षः, पौषः |
| शिशिरः | माघः, फाल्गुनः |

तृतीया विभक्तिरूपाणि -

- (पु) बालक - बालकेन - बालकाभ्यां - बालकैः
(न-पु) मित्रम् - मित्रेण - मित्राभ्यां - मित्रैः
(स्त्री) तूलिका - तूलिकया - तूलिकाभ्यां - तूलिकाभिः।



किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|---------------------------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | पदच्छेदः कृतः। | | | | |
| 2. | तृतीयाविभक्तिरूपाणां चयनं कृतम्। | | | | |
| 3. | पदानि वचनानुसारं लिखितानि। | | | | |
| 4. | नामपदानां क्रियापदानां च विवेचनं कृत्वा लिखितानि। | | | | |
| 5. | अक्षरमालाक्रमेण शब्दकोशः निर्मितः। | | | | |
| 6. | चित्रानुसारं वर्णानां नामानि लिखितानि। | | | | |
| 7. | आशंसापत्रनिर्माणं कृतम्। | | | | |
| 8. | कथापूरणं कृतम्। | | | | |
| 9. | नौकागानं सतालम् आलपितम्। | | | | |

*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



चतुर्थः पाठः

एष धर्मः सनातनः

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः

परोपकाराय वहन्ति नद्यः।

परोपकाराय दुहन्ति गावः

परोपकाराय सतां विभूतयः।।

अन्वयः - वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। नद्यः परोपकाराय वहन्ति। गावः परोपकाराय दुहन्ति। सतां विभूतयः परोपकाराय (भवन्ति)।

आशयः - वृक्षाः परेभ्यः स्वकीयानि फलानि यच्छन्ति। नद्यः स्नानाय पानाय सस्यसेचनाय च प्रवहन्ति। धेनवः अन्येभ्यः क्षीरं यच्छन्ति। एवं सज्जनाः स्वकीयम् ऐश्वर्यं सर्वमपि परार्थं यच्छन्ति।

वृश्चिकस्य विषं पुच्छे
मक्षिकायाश्च मस्तके ।
तक्षकस्य विषं दन्ते
सर्वाङ्गे दुर्जनो विषम् ॥

पदच्छेदः - मक्षिकायाः + च = मक्षिकायाश्च ।

अन्वयः - वृश्चिकस्य विषं पुच्छे (भवति) । मक्षिकायाः मस्तके च । तक्षकस्य विषं दन्ते (भवति) ।
सर्वाङ्गे दुर्जनः विषं (भवति) ।

आशयः - शुक्रकीटस्य लाङ्गूले विषम् । मक्षिकायाः शीर्षे विषं भवति । सर्पस्य तु दन्ते एव भवति
विषम् । दुर्जनस्य सर्वेषु अङ्गेषु विषं व्याप्तं भवति । प्राणिनां केवलम् एकस्मिन् एव
अङ्गे विषम् । दुर्जनस्य तु सर्वेषु अङ्गेषु विषम् । अतः दुर्जनसंसर्गः सदा उपेक्षणीयः
इति सारः ।

न चोरहार्यं न च राजहार्यम्
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनात् प्रधानम् ॥

पदच्छेदः - वर्धते + एव = वर्धत एव ।

अन्वयः - विद्याधनं चोरहार्यं न (भवति) । राजहार्यं च न (भवति) । भ्रातृभाज्यं च न (भवति) ।
भारकारि च न (भवति) । व्यये कृते नित्यं वर्धते एव । (अतः) विद्याधनं सर्वधनात्
प्रधानं (भवति) ।

आशयः - विद्याधनं चोरैः अपहर्तुं न शक्यते । राजपुरुषैः हर्तुं न शक्यते । सोदरेभ्यः विद्याधनं न
विभज्य दातव्यमस्ति । मार्गे भारं न करोति । नित्यम् अन्येभ्यः प्रदाने अपि अधिकाधिकं
वर्धते एव न क्षीयते । अतः विद्याधनं सर्वेभ्यः धनेभ्यः प्रमुखं प्रधानं च भवति ।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियञ्च नानृतं ब्रूयात्
एष धर्मः सनातनः ॥



पदच्छेदः - प्रियं + च = प्रियञ्च ।

न + अनृतम् = नानृतम्

एषः + धर्मः = एष धर्मः ।

अन्वयः - सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्, अप्रियं सत्यं न ब्रूयात् । प्रियं च अनृतं न ब्रूयात् । एषः सनातनः धर्मः ।

आशयः - सर्वैः सदा सत्यं वक्तव्यम् । प्रियं वक्तव्यम् । सत्यमपि अप्रियं न वक्तव्यम् । प्रियं चेदपि असत्यं न वक्तव्यम् । एषः एव सार्वकालिकः धर्मः ।

किं करणीयम् ?

- सुभाषितश्लोकान् एकैकशः सङ्घशः च सतालमालपतु ।
- सुभाषितेषु विद्यमानानि क्रियापदानि चित्वा लिखतु ।
- प्रदत्ते वाक्ये पठित्वा तदाशययुक्तं सुभाषितं लिखतु ।
 - नद्यः अन्येभ्यः जलं यच्छन्ति ।
 - प्रियं चेदपि असत्यं न वक्तव्यम् ।
- श्लोकेभ्यः आप्तवाक्यानि चित्वा लिखतु ।
- प्रदत्तानि पदानि विभक्त्यनुसारं वर्गीकरोतु ।

(परोपकाराय, सर्वधनात्, नालिकायाः मोचनाय, रोगात्, तस्मात्, रमायै, यानात्)

चतुर्थीविभक्तिः

परोपकाराय

.....

.....

.....

पञ्चमीविभक्तिः

सर्वधनात्

.....

.....

.....



• उदाहतानुसारं पुरयतु ।

- उदा.- वृक्षाः फलन्ति । (परोपकारः)
 वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति ।
 दीपः..... भवति । (प्रकाशः)
 औषधम् भवति । (रोगशमनम्)
- उदा.- फलं..... पतति । (वृक्षः)
 फलं वृक्षात् पतति ।
 जनाः..... अवतरन्ति । (यानम्)
 जलं स्रवति (नालिका)
 धीरजः स्थूलतरः भवति (विवेकः)

अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नडम् | आङ्गलम् |
|----------|------------|----------------|------------------|---------|
| अनृतम् | असत्यम् | गुण | असತ್ಯ | Lie |
| अप्रियम् | अनिष्टम् | ഇഷ്ടമല്ലാത്തത് | ಪ್ರಿಯವಲ್ಲದ | Dislike |
| इदम् | एतत् | ഇത് | ಇದು | This |
| गावः | धेनवः | പശുക്കൾ | ದನಗಳು | Cows |
| चोरः | तस्करः | കള്ളൻ | ಚೋರನು | Thief |
| तक्षकः | सर्पविशेषः | പാമ്പ് | ತಕ್ಷಕನೆಂಬ ಹಾವು | Serpant |
| दुहन्ति | क्षरन्ति | കറക്കുന്നു | ಹಾಲು ಸುರಿಸುತ್ತವೆ | Milks |



| | | | | |
|------------|-------------|--------------------|-----------------|-------------------|
| नित्यम् | प्रतिदिनम् | ദിവസവും | ಪ್ರತಿದಿನವೂ | Daily |
| पुच्छम् | लाङ्गूलम् | വാൽ | ಬಾಲ | Tail |
| फलन्ति | फलन्ति | കായ്ക്കുന്നു | ಹಣ್ಣು ಕೊಡುತ್ತವೆ | bear fruit |
| ब्रूयात् | वदेत् | പറയണം | ಹೇಳಬೇಕು | Should say |
| भाज्यम् | विभक्तम् | ഭാഗിക്കപ്പെടേണ്ടത് | ವಿಭಾಗಿಸುವುದು | To be divided |
| भ्राता | सोदरः | സഹോദരൻ | ಸಹೋದರನು | Brother |
| मस्तकः | शीर्षम् | തല | ತಲೆ | Head |
| मक्षिका | विषशूका | കടന്നൽ | ನೊಣ | wasp |
| वहन्ति | स्रवन्ति | ഒഴുകുന്നു | ಹರಿಯುತ್ತವೆ | Flow |
| विभूतिः | ऐश्वर्यम् | ഐശ്വര്യം | ಸಂಪತ್ತುಗಳು | prosperity |
| विषम् | गरलम् | വിഷം | ವಿಷ | Poison |
| वृश्चिकः | शुककीटः | തേൾ | ಬೇಳು | scorpion |
| सनातनः | नित्यः | നാശമില്ലാത്തത് | ಶಾಶ്ವತವಾದ | Immortal |
| सर्वाङ्गम् | प्रत्यङ्गम् | ശരീരം മുഴുവനും | ಇಡೀ ಶರೀರ | Whole of the body |

धातुरूपाणि

वह प्रापणे लट् परस्मैपदी (प्रकृते स्यन्दनार्थः)

| | | | |
|---------|-------|--------|---------|
| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
| प्र.पु. | वहति | वहतः | वहन्ति |
| म.पु. | वहसि | वहथः | वहथ |
| उ.पु. | वहामि | वहावः | वहामः । |

एवं भू धातोः लटि रूपाणि ।



दुह् प्रपूरणे उभयपदी (परस्मैपदी) लट्

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|---------|--------|--------|---------|
| प्र.पु. | दोग्धि | दुग्धः | दुहन्ति |
| म.पु. | दोक्षि | दुग्धः | दुग्ध |
| उ.पु. | दोह्मि | दुह्वः | दुह्वः। |

ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि - विधिलिङ्

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|--------|----------|------------|----------|
| प्र-पु | ब्रूयात् | ब्रूयाताम् | ब्रूयुः |
| म-पु | ब्रूयाः | ब्रूयातं | ब्रूयात |
| उ-पु | ब्रूयाम् | ब्रूयाव | ब्रूयाम। |

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|-------------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | सुभाषितं सतालम् आलपितम्। | | | | |
| 2. | क्रियापदानां चयनं कृतम्। | | | | |
| 3. | आशयानुसारं सुभाषितं चित्वा लिखितम्। | | | | |
| 4. | आप्तवाक्यानि चित्वा लिखितानि। | | | | |
| 5. | विभक्त्यनुसारं पट्टिका कृता। | | | | |
| 6. | उदाहतानुसारं वाक्यानि पूरितानि | | | | |

*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



पञ्चमः पाठः सुन्दरं भवनम्

इदम् अरुणायाः गृहम्। गृहे माता पिता पितामहः पितामही सोदरश्च ससन्तोषं वसन्ति।
गृहाङ्कणस्य पार्श्वे आरामः वर्तते। महानसस्य समीपे कूपः च वर्तते। अङ्कणं मल्लिका पाटलम्
इत्यादिभिः सुगन्धिभिः पुष्पैः शोभते। गेहस्य पुरतः व्रीहिक्षेत्रं पक्वसस्यैः सुवर्णाभया विलसति।
तत्पार्श्वे कापि वापी विद्यते। अतः सेचनाय जलमपि सुलभम्। भवनस्य पृष्ठतः शाकोद्यानमस्ति।



तस्मात् भेण्डः, कारवेलः, कूश्माण्डम् एवमादयः शाकाः सुलभाः एव। शाकोद्यानसमीपे वृष्टिजलसम्भरणी स्थापिता च। आलयस्य दक्षिणतः गोशाला वर्तते। ततः गोमयम् उर्वरकत्वेन उपयुज्यते। तथा जैवमालिन्यसंस्करणाय अपि व्यवस्था कल्पिता। तस्मात् पाकार्थं वातकमपि सुलभमेव। गृहं परितः आम्रपनसकेरादयः बहवः वृक्षाः वर्तन्ते। एवं पुष्पफलवृक्षादिभिः अरुणायाः गृहं शुद्धं सुन्दरं समृद्धं च विराजते।

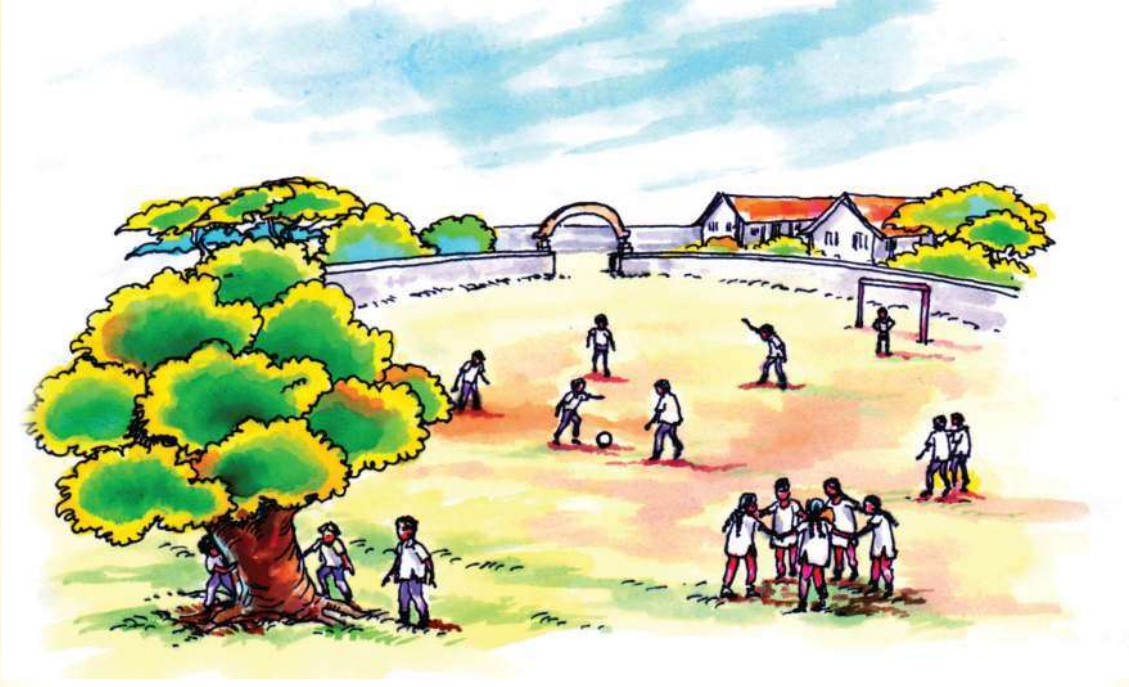


किं करणीयम् ?

- पाठभागं पठित्वा स्वकीयं गृहमधिकृत्य पञ्च वाक्यानि लिखतु ।
- पाठभागात् पुष्पाणां शाकानां च नामानि चित्वा पट्टिकां पुरयतु ।

| पुष्पाणि | शाकाः |
|----------|-------|
| | |

- चित्रं दृष्ट्वा उदाहरणानुसारं द्वित्राणि वाक्यानि लिखतु ।



उदाहरणम् - विद्यालयस्य समीपे क्रीडाङ्कणम् अस्ति ।

- कोष्ठकात् अक्षराणि स्वीकृत्य पदानि रचयतु ।

| | | | |
|----|------|----|------|
| म | गृ | वा | शा |
| आ | ल्लि | वृ | पी |
| पा | म्र | का | हं |
| ह | लं | ज | क्षः |

पदप्रश्नः

- अधोदत्तानां प्रश्नानाम् उत्तराणि उपयुज्य पदप्रश्नं पूरयतु ।

दक्षिणतः

१. इदमेकं पुष्पम् ।
२. इदं धेनूनां गृहम् ।
३. अस्मत् शब्दस्य षष्ठी एकवचने रूपम् ।
४. भवनम् इत्यर्थकं पदं किम् ?

| | | | |
|-----------------|-----------------|-----------------|----------------|
| म ^१ | | का | अ ^५ |
| के ^६ | गो ^२ | | |
| | ३ | म | बु |
| | | गृ ^४ | |

अधः

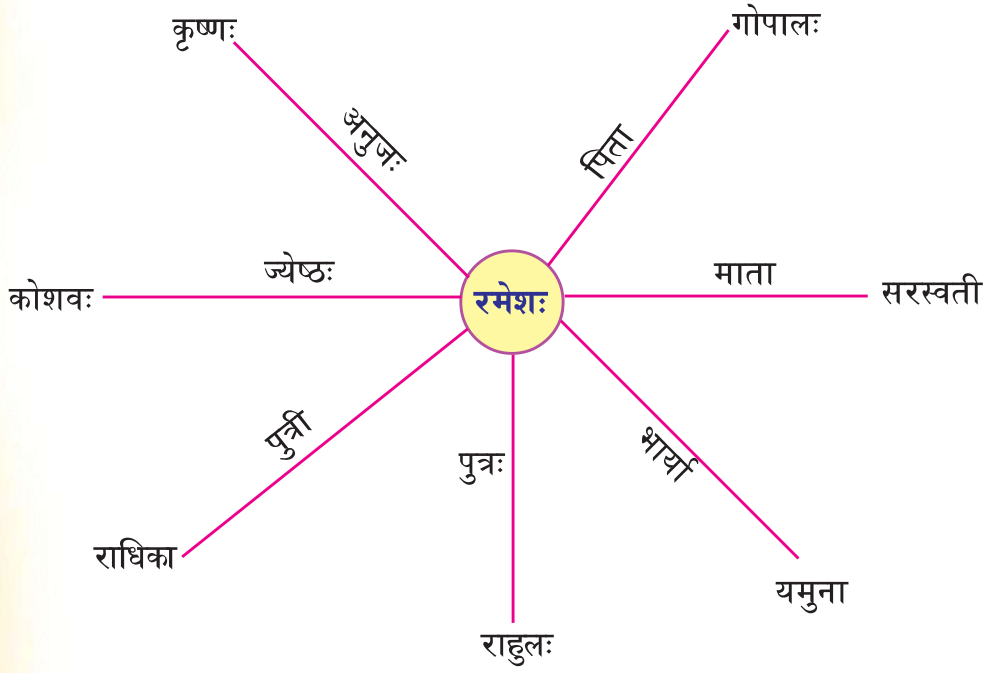
२. इदमेकम् उर्वरकम् ।
५. एकः शाकः ।
६. इदं व्रीहीणां क्षेत्रम् ।

- उदाहरणानुसारं पदानां षष्ठीविभक्तिरूपाणि लिखतु ।

| पदम् | षष्ठीविभक्तिः |
|-----------|---------------|
| गृहम् | गृहस्य |
| उद्यानम् | |
| नगरम् | |
| विद्यालयः | विद्यालयस्य |
| वृक्षः | |
| बालकः | |
| उमा | उमायाः |
| बालिका | |
| गोशाला | |



● पदसूर्यस्य साह्येन बन्धुवाचकशब्दान् उपयुज्य वाक्यानि रचयतु ।



- उदा: १. रमेशस्य पिता गोपालः भवति ।
२. रमेशः गोपालस्य पुत्रः भवति ।

अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नटम् | आङ्गलम् |
|-----------|--------------|---------------|------------|-------------|
| अङ्कणम् | चत्वरम् | മുറ്റം | ಅಂಗಳ | Courtyard |
| आरामः | उद्यानम् | പുത്തോട്ടം | ಹೂದೋಟ | garden |
| उर्वरकम् | उर्वरकम् | വളം | ಗೊಬ್ಬರ | manure |
| कूपः | अन्धुः | കിണർ | ಬಾವಿ | well |
| गृहम् | भवनम् | വീട് | ಮನೆ | House |
| गोमयम् | गोपुरीषः | ചാണകം | ಸೆಗಣಿ | Cowdung |
| गोशाला | गोष्ठम् | പശുത്തൊഴുത്ത് | ಹಟ್ಟಿ | Cattle shed |
| जलम् | सलिलम् | വെള്ളം | ನೀರ | Water |
| पाकवातकम् | पचनाय वातकम् | പാചകവാതകം | ಅಡುಗೆ ಅನಿಲ | Cooking Gas |



| | | | | |
|-----------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------------------|
| पिता | तातः | അച്ഛൻ | ತಂದೆ | Father |
| पितामहः | पितुः पिता | അച്ഛന്റെ അച്ഛൻ | ಅಜ್ಜ(ತಂದೆಯ ತಂದೆ) | Grandfather |
| पितामही | पितुः माता | അച്ഛന്റെ അമ്മ | ಅಜ್ಜಿ(ತಂದೆಯ ತಾಯಿ) | Grandmother |
| पुष्पैः | कुसुमैः | പൂക്കളാൽ | ಹೂವುಗಳಿಂದ | by flowers |
| पुष्पवाटिका | पुष्पोद्यानम् | പൂന്തോട്ടം | ಹೂದೋಟ | Garden |
| मम | मे | എന്റെ | ನನ್ನ | Mine |
| महानसे | पाकगृहे | അടുക്കളയിൽ | ಅಡುಗೆಮನೆಯಲ್ಲಿ | In the kitchen |
| माता | जननी | അമ്മ | ತಾಯಿ | Mother |
| वापी | तटाकः | കുളിಂ | ಕೊಳ | pond |
| वृष्टिजलसंभरणी | वर्षाजलसंभरणी | മഴവെള്ള സംഭരണി | ಮಳೆನೀರಿನ ಸಂಗ್ರಹಕ | rain Water harvesting unit |
| व्रीहिक्षेत्रम् | केदारः | നെൽവയൽ | ಬತ್ತದ ಗಡ್ಡೆ | rice Field |
| शाकोद्यानम् | शाकानाम् उद्यानम् | പച്ചക്കറിത്തോട്ടം | ತರಕಾರಿ ತೋಟ | Vegetable garden |
| शुद्धम् | स्वच्छम् | ശുദ്ധമായത് | ಶುದ್ಧವಾದ | Pure |

शब्दरूपाणि

ईकारान्तः स्त्रीलिङ्गः नदी शब्दः

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|------------|---------|-----------|-----------|
| प्रथमा | नदी | नद्यौ | नद्यः |
| सं- प्रथमा | हे नदि! | हे नद्यौ! | हे नद्यः! |
| द्वितीया | नदीम् | नद्यौ | नदीः |
| तृतीया | नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः |
| चतुर्थी | नद्यै | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| पञ्चमी | नद्याः | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| षष्ठी | नद्याः | नद्योः | नदीनाम् |
| सप्तमी | नद्याम् | नद्योः | नदीषु। |

एवं पुत्री - सोदरी - लेखनी , सरस्वती, मातुलानी इत्यादयः शब्दाः।



धातुरूपाणि

शुभ दीप्तौ लट् (वर्तमाने) आत्मनेपदी।

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|---------|-------|---------|----------|
| प्र.पु. | शोभते | शोभेते | शोभन्ते। |
| म.पु. | शोभसे | शोभेथे | शोभध्वे। |
| उ.पु. | शोभे | शोभावहे | शोभामहे। |

एवं वदि (वन्द्) धातोः लटि रूपाणि वदतु।

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|---------------------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | गृहमधिकृत्य पञ्चवाक्यानि लिखितानि। | | | | |
| 2. | पुष्पाणां शाकानां नामभिः पट्टिका पूरिता। | | | | |
| 3. | चित्रं दृष्ट्वा वाक्यानि रचितानि। | | | | |
| 4. | कोष्ठकात् अक्षराणि स्वीकृत्य पदानि रचितानि। | | | | |
| 5. | पदप्रश्नः पूरितः। | | | | |
| 6. | पदानां षष्ठीविभक्तिरूपाणि लिखितानि। | | | | |
| 7. | पदसूर्यसाहाय्येन वाक्यानि रचितानि। | | | | |

*

| (१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



षष्ठः पाठः ।

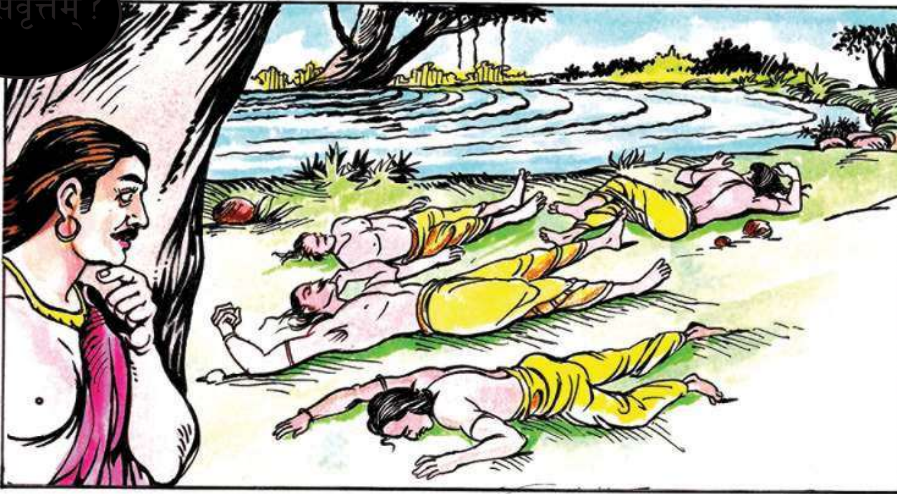
धर्मनिष्ठो युधिष्ठिरः

पाण्डवानां वनवासकालः । कस्मिंश्चित् ब्राह्मणगृहे तेषां वासः । मृगेण ब्राह्मणस्य अग्निमन्थनदण्डः
अपहृतः । तदानयनाय प्रस्थिताः पाण्डवाः मृगमदृष्ट्वा श्रान्ताः । ते पिपासाकुलाः जाताः ।
युधिष्ठिरः भ्रातृषु एकैकमपि जलमानेतुं प्रेषितवान् । परन्तु सोदराः न प्रतिनिवृत्ताः । तदा-

समयोऽतीतः । पिपासया
श्रान्तोऽहम् । जलाहरणाय गतानां
सोदराणां किम् अभवत् ? अहमेव
अन्वेष्टुं गच्छामि ।

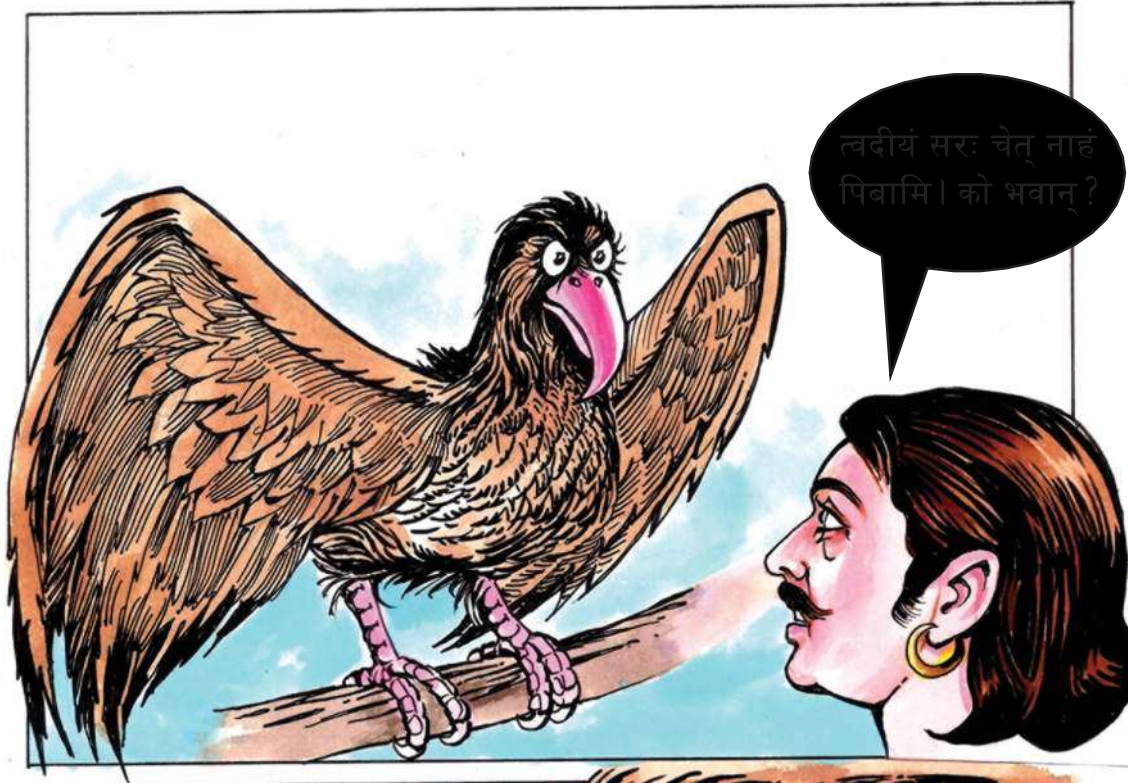


किं संवृत्तम् ?

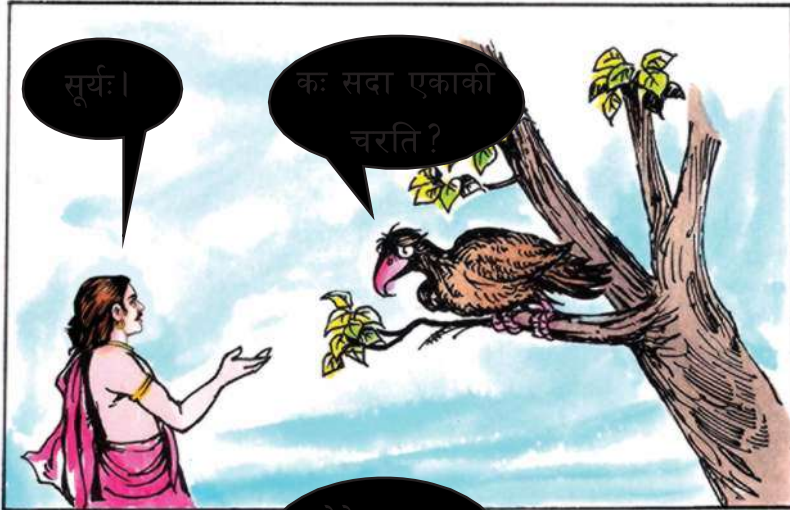


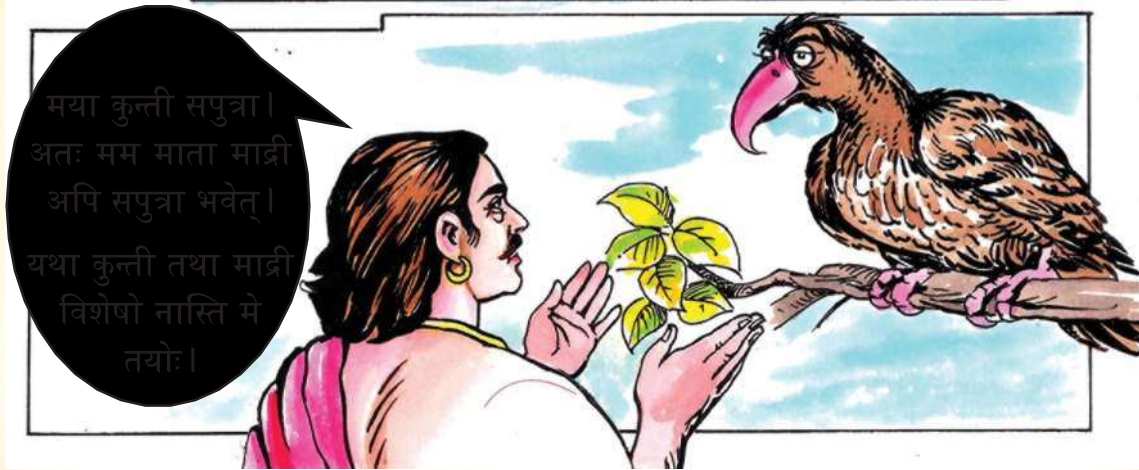
तदा जलपानाय सः अवतरति ।





यक्षः प्रहेलिकाप्रायान् कांश्चन प्रश्नान् पृच्छति। केचन प्रश्नाः-





धर्मो रक्षति रक्षितः।

किम् करणीयम् ?

- चित्रकथां पठित्वा सम्भाषणरूपेण कक्षायाम् अवतारयतु ।
- उदाहरणानुसारम् अधोदत्तानां पदच्छेदं लिखतु ।

समयोऽतीतः - समयः + अतीतः

श्रान्तोऽहम् -

प्रीतोऽस्मि -

- कोष्ठकात् सप्तमीविभक्तिरूपाणि विविच्य लिखतु ।
(जले, बालाय, गजे, वृक्षात्, रामे, सिंहः)

- भूतकालवर्तमानकालभाविकालक्रियापदानि पट्टिकारूपेण पाठभागात् विविच्य लिखतु ।

| भूतकालः | वर्तमानकालः | भाविकालः |
|---------|-------------|----------|
| | | |

- उचितं पदं चित्वा प्रश्नान् पूरयतु ।

(कः, कति, कुत्र, किम्, किमर्थम्, कुतः)

१. चित्रे पुरुषाः सन्ति ?

२. नकुलः गच्छति ?

३. युधिष्ठिरः अपश्यत् ?

४. सदा एकाकी चरति ?

५. युधिष्ठिरः..... नकुलो जीवतु इत्यवदत् ?



- पाठभागं कक्ष्यायां कथारूपेण अवतारयतु ।

अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नटम् | आङ्गलम् |
|----------------|-----------------|---------------|----------------------|----------------|
| अनादृतम् | न बहुमतम् | അദരമില്ല | ಆದರಿಸಲ್ಪಡದ | un honoured |
| गुरुतमा | गरिष्ठा | ശ്രേഷ്ഠയായ | ಶ್ರೇಷ್ಠವಾದ | greatest |
| नूनम्(अव्ययम्) | निश्चितम् | തീർച്ചയായും | ಖಂಡಿತವಾಗಿ | of course |
| निमिषति | निमेषं करोति | ഇമ ചിമ്മുക | ಕಣ್ಣು ಮಿಟುಕಿಸುತ್ತಾನೆ | blink the eyes |
| पिपासा | तृषा | ദാഹം | ಬಾಯಾರಿಕೆ | thirst |
| पिबति | पानम् करोति | കുടിക്കുന്നു | ಕುಡಿಯುತ್ತಾನೆ/ಳಿದೆ | Drink |
| सजीवम् | जीवेन सह वर्तते | ജീവനോടെ | ಸಜೀವವಾಗಿ | alive |
| हताः | मारिताः | കൊല്ലപ്പെട്ടു | ಕೊಲ್ಲಲ್ಪಟ್ಟರು | got killed |
| श्रान्तः | क्षीणः | ക്ഷീണിച്ചവൻ | ಬಳಲಿದವನು | tired |
| शृणोमि | आकर्णयामि | കേൾക്കുന്നു | ಕೇಳುತ್ತೇನೆ | hear |



धातुरूपाणि

पा पाने परस्मैपदी लट्

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|--------|--------|--------|---------|
| प्र.पु | पिबति | पिबतः | पिबन्ति |
| म.पु | पिबसि | पिबथः | पिबथ |
| उ.पु | पिबामि | पिबावः | पिबामः |

भू सत्तायां परस्मैपदी लृट्

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|---------|-----------|-----------|------------|
| प्र.पु. | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति |
| म.पु. | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ |
| उ.पु. | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः। |

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|--------------------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | चित्रकथा सम्भाषणरूपेण अवतारिता। | | | | |
| 2. | उदाहरणानुसारं पदच्छेदः कृतः। | | | | |
| 3. | सप्तमीविभक्तेः पदानि विविच्य लिखितानि। | | | | |
| 4. | क्रियापदानां पट्टिका कृता। | | | | |
| 5. | प्रश्नवाचकपदानि उपयुज्य वाक्यानि पूरितानि। | | | | |
| 6. | कथारूपेण अवतारिता। | | | | |

*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



सप्तमः पाठः

संस्कृतं लोकरञ्जकम्



जयतु भारतं विश्वमोहनम्
नमतु सादरं भारताम्बिकाम् ।
भजतु संस्कृतं वेदमातरम्
पठतु संस्कृतं लोकरञ्जकम् ॥

सदुपदिश्यते मातृवत् सदा
हितकरीं दिशं दिशति संस्कृतम् ।
पठतु संस्कृतं ज्ञानलब्धये
विनयमाप्नुयात् विश्वभाषया ॥

मुत्तलपुरं मोहनदासः



किं करणीयम् ?

- गीतं सतालम् एकैकशः संघशः च आलपतु ।
- गानस्य पादान् यथोचितं योजयतु ।

| क | ख |
|---------------------|-----------------|
| जयतु भारतं _____ | लोकरञ्जकम् । |
| नमतु सादरं _____ | विश्वमोहनम् । |
| भजतु संस्कृतं _____ | भारताम्बिकाम् । |
| पठतु संस्कृतं _____ | वेदमातरम् । |

- भारतम् इत्यस्य स्थाने संस्कृतम् इति योजयित्वा कवितां पुनः पठतु लिखतु च ।

जयतु _____ विश्वमोहनम् ।
नमतु सादरं _____ म्बिकाम् ।

अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नडम् | आङ्गलम् |
|-----------|--------------------|------------------|------------------|--------------------|
| भजतु | भजनं करोतु/सेवताम् | ഭജിയ്ക്കൂ | ಸೇವಿಸಿ | serve |
| मोहनम् | मनोहरम् | മനോഹരമായ | ಮನೋಹರವಾದ | Beautiful |
| लब्धये | प्राप्तये | നേടുവാനായി | ಪಡೆಯಲು | To achieve |
| रञ्जकम् | आह्लाददायकम् | ആഹ്ಲാദം തരുന്നു | ಸಂತೋಷವನ್ನು ಕೊಡುವ | pleasure giving |
| विनयः | नम्रता | താഴ്മ | ನಮ್ರತೆ | humble |
| विश्वभाषा | लोकभाषा | ലോകഭാഷ | ವಿಶ್ವಭಾಷೆ | Universal language |
| दिशति | सूचयति | സൂചിപ്പിക്കുന്നു | ದಾರಿತೋರಿಸುತ್ತದೆ | Directs |
| दिशम् | आशाम् | ദിക്കിനെ | ದಿಕ್ಕನ್ನು | of the direction |
| सत् | उत्तमः | നല്ലത് | ಒಳ್ಳೆಯ | Good |



धातुरूपाणि

भज सेवायाम् (उभयपदी)परस्मैपदी लोट्

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|---------|-------------|--------|--------|
| प्र. पु | भजतु/भजतात् | भजताम् | भजन्तु |
| म. पु | भज/भजतात् | भजतम् | भजत |
| उ.पु | भजानि | भजाव | भजाम। |

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्या सूच्यताम्)* |
|-------------|-------------------------------|--------------|----------------|---------------|----------------------------------|
| 1. | कविता सतालम् आलपिता । | | | | |
| 2. | गानस्य पादाः यथोचितं योजिताः। | | | | |
| 3. | निर्देशानुसारं कविता लिखिता। | | | | |

*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



अष्टमः पाठः अकृत्यं नैव कर्तव्यम्

(महात्मना विष्णुशर्मणा विरचितात् 'पञ्चतन्त्रात्' स्वीकृता कथा)



कस्मिंश्चिद् वने सिंहपरिवारो वसति स्म । सिंही प्रसवानन्तरं शिशुं परिपालयन्ती गुहायां शेते स्म । सिंहः प्रतिदिनं मृगान् हत्वा आनयत् । एकस्मिन् दिने सः कमपि मृगं न अलभत ।



निराशो भूत्वा प्रतिनिवर्त्तमानः सः मार्गमध्ये एकं शृगालशाबकम् अपश्यत् । तं सजीवमानीय भार्याम् अवदत् - “प्राणापायेऽपि नारीं ब्रह्मचारिणं सन्यासिनं बालं च न हन्यात्” इत्यतः अस्य



वधं न करोमि। सिंहस्य वचनं श्रुत्वा सिंही अवदत् - “प्रभो! एवं चेत् अहम् इमं पालयामि” इति।



द्विपुत्रसहिता सिंही शृगालशिशुं स्वपुत्रमिव स्वस्तन्येन पोषयितुं निश्चिनोति। एवं सिंहपुत्रैः साकं शृगालोऽपि ससुखमवसत्।



“अकृत्यं नैव कर्तव्यं प्राणत्यागेऽपि संस्थिते।
न च कृत्यं परित्याज्यं धर्म एषः सनातनः।।”



अन्वयः - प्राणत्यागे संस्थिते अपि अकृत्यं न एव कर्तव्यम्। कृत्यं च न परित्याज्यं,
(यतः) धर्म एषः सनातनः।

सारांशः - जीवनाशे सम्प्राप्ते अपि अयोग्यं कर्म न कर्तव्यम्। योग्यकर्म न उपेक्षणीयम्। यतः
एष धर्मः एव सनातनः।



किं करणीयम् ?

- कथां पठित्वा भावानुसारम् अवतारयतु ।
- अधो दत्तेभ्यः पदेभ्यः लट् लङ् रूपाणि च विविच्य पट्टिकारूपेण लिखतु -
(अवदत्, वसति, अवसत्, पश्यति, अनयत्, करोमि, वदति, अपश्यत्, नयति, अकरोत्)

| लट् (वर्तमाने) | लङ् (भूते) |
|----------------|------------|
| वसति | अवसत् |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

- अधिकवाचनांशं पठित्वा पट्टिकां पूरयतु ।
(परिपाल्य, भूत्वा, परिपालयितुम्, आनीय, श्रुत्वा. दत्त्वा)

| क्त्वान्तमव्ययम् | त्यबन्तमव्ययम् | तुमुन्नन्तमव्ययम् |
|------------------|----------------|-------------------|
| हत्वा | आनीय | पोषयितुम् |

- कथास्तम्भान् क्रमीकरोतु ।
 - ❖ एकस्मिन् दिने सः कमपि मृगं न अलभत ।
 - ❖ सिंहस्य वचनं श्रुत्वा सिंही अवदत् - “प्रभो एवं चेत् अहम् इमं पालयामि” इति ।
 - ❖ कस्मिंश्चिद् वने सिंहपरिवारो वसति स्म ।
 - ❖ शृगालशिशुं स्तन्यं दत्वा स्वपुत्रमिव परिपालयितुं निश्चिनोति ।
 - ❖ सिंही प्रसवानन्तरं शिशुं परिपालयन्ती गुहायां शेते ।



● **यथोचितं योजयतु।**

| | |
|------------|--------------|
| शृगालशाबकं | - परिपालयामि |
| गुहायां | - न योग्यम् |
| वधं | - वसति |
| अहं | - पालयति। |

अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नटम् | आङ्गलम् |
|-------------------|---------------|------------------|------------------|----------------------|
| अवदत् | अवोचत् | പറഞ്ഞു | ಹೇಳಿದನು/ಳು/ಟು | told |
| अवसत् | वसति स्म | വസിച്ചിരുന്നു | വാಸಿಸಿದನು/ಳು/ತಳೆ | lived |
| आनयत् | आहरत् | കൊണ്ടുവന്നു | ತಂದಿತು | brought |
| आनीय | आहत्य | കൊണ്ടുവന്നിട്ട് | ತಂದು | having brought |
| इमम् | एनम् | ഇവനെ | ಇವನನ್ನು/ಇದನ್ನು | him |
| एवम् | इत्थम् | ഇപ്രകാരം | ಈ ರೀತಿ | thus |
| कस्मिंश्चित् | कुत्रचित् | ഏതോ ഒരു | ಒಂದಾನೊಂದು | any one |
| चेत् | तर्हि | എങ്കിൽ | ಹಾಗಾದರೆ | though |
| नारी | स्त्री | വനിത | ಸ್ತ್ರೀ | women |
| परिपालयन्ती | संरक्षन्ती | വളർത്തുന്നവൾ | ಪರಿಪಾಲಿಸುತ್ತಾರೆ | having nourished |
| परिवारः | कुटुम्बम् | കുടുംബം | ಕುಟುಂಬ | family |
| पश्यति | ईक्षते | കാണുന്നു | ನೋಡುತ್ತಾನೆ/ಳೆ/ದ | see |
| प्रतिनिवर्त्तमानः | प्रत्यागच्छन् | തിരിച്ചുവരുന്നവൻ | ಹಿಂತಿರುಗಿದವನು | one who has returned |
| प्राणापाये | जीवनाशे | ജീവനാശത്തിൽ | ಪ್ರಾಣಾಪಾಯದಲ್ಲಿ | at death |
| शाबकः | शिशुः | കുഞ്ഞ് | ಮರಿ | child |



| | | | | |
|----------|-------------|-------------|-----------|---------------|
| शेते | संविशति | കിടക്കുന്നു | ಮಲಗುತ್ತದೆ | lays |
| श्रुत्वा | निशम्य | കേട്ടിട്ട് | ಕೇಳಿ | having heard |
| शृगालः | जम्बुकः | കുറുക്കൻ | ನರ | fox |
| स्तनः | पयोधरः | മുല | ಮೊಲೆ | breast |
| स्तन्यम् | स्तनक्षीरम् | മുലപ്പാൽ | ಮೊಲೆ ಹಾಲು | breast milk |
| साकम् | सहितम् | ഒപ്പം/കൂടെ | ಜೊತೆಗೆ | with |
| हत्वा | मारयित्वा | കൊന്നിട്ട് | ಕೊಂದ | having killed |

● अधिकवाचनांशः

- परिपालयन्ती - संरक्षन्ती । - माता पुत्रान् परिपालयन्ती जीवति ।
- आनीय - आहृत्य (ल्यबन्तमव्ययम्) - माता जलमानीय स्नाति ।
- हत्वा - मारयित्वा (क्त्वान्तमव्ययम्) - मृगराजः मृगान् हत्वा आहरति ।
- श्रुत्वा - आकर्ण्य (क्त्वान्तमव्ययम्) - बालिका गानं श्रुत्वा नृत्यति ।
- परिपालयितुम् - रक्षितुम् (तुमुन्नन्तमव्ययम्) - बालाः वृक्षान् परिपालयितुम् इच्छन्ति ।

अमरकोशः

सिंहः - सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

शृगालः - शृगालवञ्चुकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः ।

अव्ययम्

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।

वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥



शब्दरूपाणि

अकारान्तः नपुंसकलिङ्गः वन शब्दः ।

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|----------|--------|-----------|-----------|
| प्रथमा | वनम् | वने | वनानि |
| सं. प्र. | हे वन! | हे वने! | हे वनानि! |
| द्वितीया | वनम् | वने | वनानि |
| तृतीया | वनेन | वनाभ्याम् | वनैः |
| चतुर्थी | वनाय | वनाभ्याम् | वनेभ्यः |
| पञ्चमी | वनात् | वनाभ्याम् | वनेभ्यः |
| षष्ठी | वनस्य | वनयोः | वनानाम् |
| सप्तमी | वने | वनयोः | वनेषु । |

धातुरूपाणि

वस् निवासे परस्मैपदी लट् ।

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|--------|-------|--------|---------|
| प्र.पु | वसति | वसतः | वसन्ति |
| म.पु | वससि | वसथः | वसथ |
| उ.पु | वसामि | वसावः | वसामः । |

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु ।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|----------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | भावानुसारं कथाम् अवतारिता । | | | | |
| 2. | पट्टिकापूरणं कृतम् (लट्-लङ् च) । | | | | |
| 3. | अव्ययानां पट्टिका कृता । | | | | |
| 4. | कथास्तम्भाः क्रमीकृताः । | | | | |
| 5. | यथोचितं योजितः । | | | | |

*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



नवमः पाठः गीतामृतम्

अन्नात् भवन्ति भूतानि
पर्जन्यादन्नसम्भवः ।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो
यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥

पदच्छेदः - पर्जन्यादन्नसम्भवः - पर्जन्यात् + अन्नसम्भवः ।

पर्जन्यो यज्ञः- पर्जन्यः+ यज्ञः ।

अन्वयः - अन्नात् भूतानि भवन्ति । पर्जन्यात् अन्नसम्भवः (भवति) । यज्ञात् पर्जन्यः भवति । यज्ञः कर्मसमुद्भवः (भवति) ।

सारांशः - यागकर्मणा (यज्ञहोमादिकर्मणा) मेघः जायते । ततः वृष्टिः भवति । वर्षेण वृक्षलतादयः जायन्ते । वृक्षलतादीनां साह्येन सर्वे चराचराः जायन्ते वर्धन्ते च । अतः यथासमयं कर्मणाम् अनुष्ठानेन जीविनां रक्षको भव इत्याशयः ।



जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः
ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे
न त्वं शोचितुमर्हसि ॥

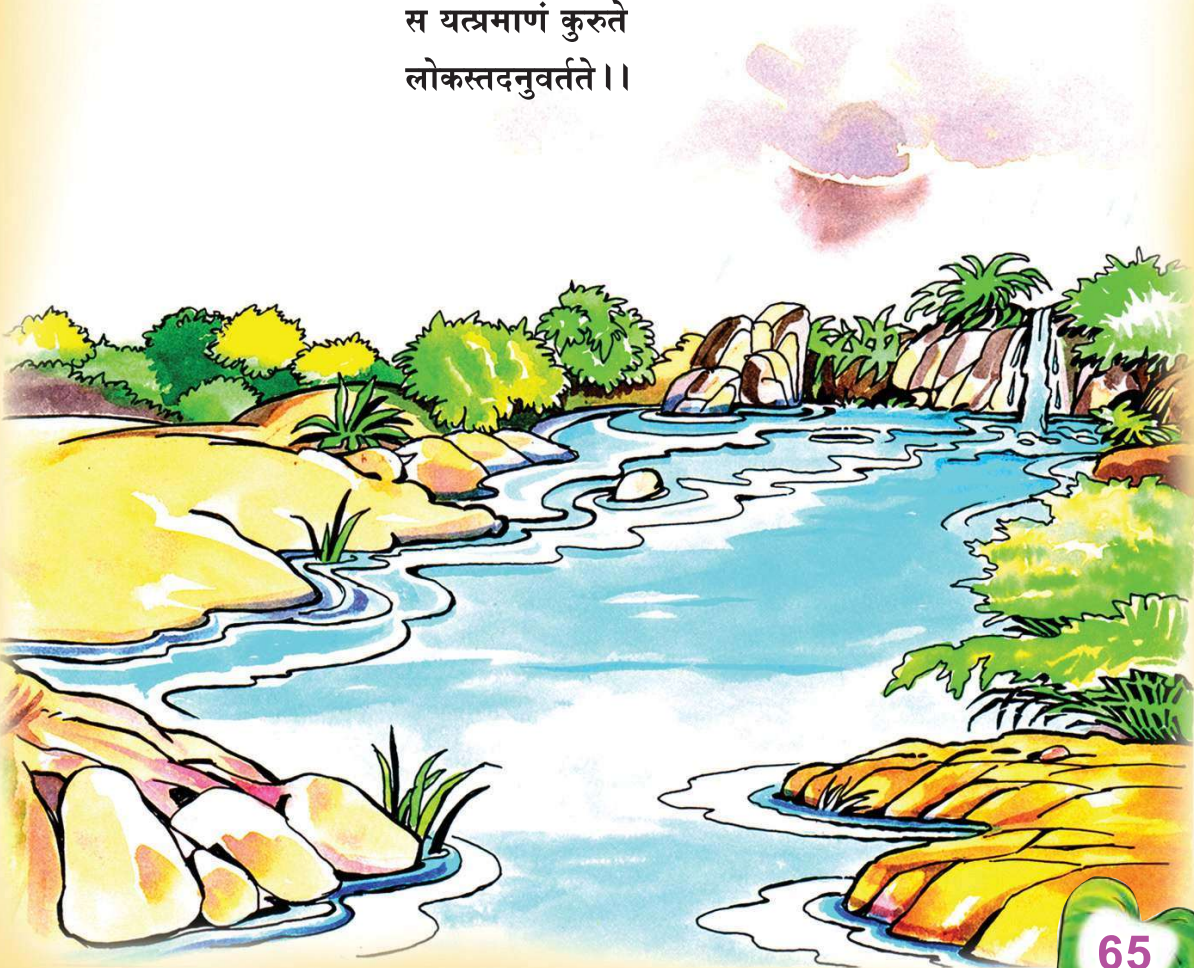
पदच्छेदः - तस्मादपरिहार्येऽर्थे - तस्मात् + अपरिहार्ये + अर्थे ।

ध्रुवो मृत्युः - ध्रुवः + मृत्युः ।

अन्वयः - जातस्य मृत्युः ध्रुवः हि । मृतस्य जन्म च ध्रुवम् । तस्मात् अपरिहार्ये अर्थे त्वं शोचितुं न अर्हसि ।

सारांशः - जातस्य प्राणिनः मरणं सुनिश्चितम् एव । मृतस्य पुनर्जननं च सुनिश्चितम् । तस्मात् जनिमरणे परिहर्तुम् अशक्ये । अतः तस्मिन् विषये शोको न कर्तव्यः इत्याशयः ।

यद्यदाचरति श्रेष्ठ-
स्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते
लोकस्तदनुवर्तते ॥



पदच्छेदः -

- यद्यदाचरति - यत् + यत् + आचरति।
श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः - श्रेष्ठः + तत् + तत् + एव + इतरः + जनः।
स यत्प्रमाणम् - सः + यत् + प्रमाणम्।
लोकस्तदनुवर्तते - लोकः + तत् + अनुवर्तते।

अन्वयः - श्रेष्ठः यत् यत् आचरति इतरः जनः तत् तत् एव आचरति। सः यत् प्रमाणं कुरुते, तत् एव लोकः अनुवर्तते।

सारांशः - श्रेष्ठपुरुषः अस्मिन् लोके किं कर्म करोति इति निरीक्ष्य जनः तदेव अनुवर्तितुम् इच्छति। अतः श्रेष्ठपुरुषः यत् प्रमाणरूपेण स्वीकरोति तदेव अपरः अपि प्रमाणत्वेन स्वीकरोति इति आशयः।

यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

पदच्छेदः -

- ग्लानिर्भवति - ग्लानिः + भवति।
तदात्मानम् - तदा + आत्मानम्।
सृजाम्यहम् - सृजामि + अहम्।

अन्वयः - हे भारत ! यदा यदा धर्मस्य ग्लानिः अधर्मस्य अभ्युत्थानं च भवति हि तदा अहम् आत्मानं सृजामि।

सारांशः - हे अर्जुन! यस्मिन् समये धर्मः क्षीयते अधर्मः वर्धते तस्मिन् अवसरे धर्मरक्षणार्थम् अहं (श्रीकृष्णः) स्वयं भूमौ अवतरामि इत्याशयः॥

परित्राणाय साधूनाम्
विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे॥



अन्वयः - साधूनां परित्राणाय दुष्कृतां विनाशाय धर्मसंस्थापनार्थाय च युगे युगे (अहं) सम्भवामि ।
सारांशः - लोके सज्जनानां रक्षणाय दुष्टानां विनाशाय एवं धर्मस्य स्थापनाय च अहं प्रतियुगं
भूमौ अवतरामि ।

किं करणीयम् ?

- श्लोकम् एकैकशः संघशः च आलपतु ।
- “अहं धर्मसंस्थापनार्थम् अवतरामि” । इति आशयप्रतिपादकं श्लोकं विविच्य लिखतु ।
- यथोचितं योजयतु ।

अन्नात् कर्मसमुद्भवः

यज्ञः मृत्युः

जातस्य भूतानि

- अधोदत्तेभ्यः पदेभ्यः नामपदानि क्रियापदानि च विविच्य लिखतु ।
(अन्नात्, भवन्ति, यज्ञः, भूतानि, अर्हसि, समुद्भवः, जनः, आचरति, कुरुते, अनुवर्तते)

| नामपदानि | क्रियापदानि |
|----------|-------------|
| अन्नात् | भवन्ति |

वाक्ये प्रयोगः

- उदाहतानुसारं वाक्यानि योजयतु ।
यदा - तदा
सूर्यः उदयते । अन्धकारः विनश्यति ।
यदा सूर्यः उदयते तदा अन्धकारः विनश्यति ।
१. गुरुः कक्ष्यां प्रविशति । छात्राः उत्तिष्ठन्ति ।
.....



೨. ವೃಷ್ಟಿ: ಆಗच्छति । छत्रम् उद्घाटयति ।

.....

೩. यानं स्थगति । जनाः प्रविशन्ति ।।

.....

अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नटम् | आङ्गलम् |
|---------------------|-------------------------|-------------------------------|---------------|--------------------------|
| अन्नम् | ओदनः | ചോറ് | ಅನ್ನ | rice |
| अनुवर्तते | अनुसरति | അനുവർത്തിക്കുന്നു | ಅನುಸರಿಸುತ್ತದೆ | follows |
| अभ्युत्थानम् | अभ्युन्नतिः | അഭിവൃദ്ധി | ಬೆಳವಣಿಗೆ | raising |
| इतरः | अपरः | മറ്റൊരുവൻ | ಇನ್ನೊಬ್ಬನು | other one |
| कुरुते | करोति | ചെയ്യുന്നു | ಮಾಡುತ್ತಾನೆ | do |
| ग्लानिः | क्लमः | ക്ഷീണം | ಕ್ಷೀಣತೆ | weakness |
| जातः | लब्धजन्मा | ജനിച്ചവൻ | ಹುಟ್ಟಿದವನು | one who is born |
| ध्रुवः | निश्चितः | സ്ഥിരಂ | ನಿಶ್ಚಯವಾಗಿ | stable |
| पर्जन्यः | मेघः | മേഘം | ಮಳೆ | cloud |
| प्रमाणम् | नियमः | നിയമം | ಯಥಾರ್ಥವಾದುದು | authenticity |
| भूतानि | चराचराणि | ചരചരങ്ങൾ | ಜೀವಿಗಳು | moving and non-moving |
| मृत्युः | मरणम् | മരണം | ಸಾವು | death |
| यज्ञः | यागः | യാഗം | ಯಾಗ | sacrifice |
| शोचितुम् | दुःखितुम् | ദുഃഖിക്കുന്നതിന് | ದುಃಖಿಸಲು | to worry |
| सृजामि (आत्मानं) | अवतरामि | സൃഷ്ടിക്കുന്നു | ಅವತರಿಸುತ್ತೇನೆ | create |
| दुष्कृताम् | दुष्टं कर्म कुर्वाणानां | ദുഷ്ടകർമ്മം ചെയ്യുന്നവരുടെ | ಕೆಟ್ಟವನು | of wicked people |



शब्दरूपाणि

दकारान्तः त्रिषु लिङ्गेषु समानः अस्मद् शब्दः ।

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|----------|------------|---------------|---------------|
| प्रथमा | अहम् | आवाम् | वयम् |
| द्वितीया | माम्, मा | आवां, नौ | अस्मान्, नः |
| तृतीया | मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| चतुर्थी | मह्यम्, मे | आवाभ्याम्, नौ | अस्मभ्यम्, नः |
| पञ्चमी | मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् |
| षष्ठी | मम, मे | आवयोः, नौ | अस्माकम्, नः |
| सप्तमी | मयि | आवयोः | अस्मासु । |

दकारान्तः त्रिषु लिङ्गेषु समानः युष्मद् शब्दः ।

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|----------|--------------|-----------------|----------------|
| प्रथमा | त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| द्वितीया | त्वाम्, त्वा | युवाम्, वां | युष्मान्, वः |
| तृतीया | त्वया | युवाभ्याम् | युष्माभिः |
| चतुर्थी | तुभ्यम्, ते | युवाभ्याम्, वां | युष्मभ्यम्, वः |
| पञ्चमी | त्वत् | युवाभ्याम् | युष्मत् |
| षष्ठी | तव, ते | युवयोः, वां | युष्माकम्, वः |
| सप्तमी | त्वयि | युवयोः | युष्मासु । |



दकारान्तः तद् शब्दः । पुंसि ।

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|----------|---------|----------|--------|
| प्रथमा | सः | तौ | ते |
| द्वितीया | तं | तौ | तान् |
| तृतीया | तेन | ताभ्याम् | तैः |
| चतुर्थी | तस्मै | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| पञ्चमी | तस्मात् | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| षष्ठी | तस्य | तयोः | तेषाम् |
| सप्तमी | तस्मिन् | तयोः | तेषु । |

प्रायः सर्वनामशब्दानां सम्बोधनप्रथमा नास्ति ।

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु ।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|-------------------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | श्लोकः आलपितः । | | | | |
| 2. | गीतं विविच्य लिखितम् । | | | | |
| 3. | यथोचितं योजितानि । | | | | |
| 4. | नामपदानि क्रियापदानि च विविच्य लिखितानि । | | | | |
| 5. | उदाहृतानुसारं वाक्यानि लिखितानि । | | | | |

*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



दशमः पाठः

जीयाद् गीर्वाणभारती

भाषा संस्कृतिवाहिनी। अस्माकं संस्कृतिः संस्कृतभाषाम् अधिष्ठिता। इयम् अमरवाणी सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी इति प्रायः सर्वे अङ्गीकुर्वन्ति। वेदवेदाङ्गानाम् इतिहासपुराणादीनां च भाषा इयमेव भवति। गणितायुर्वेदादीनां शास्त्राणां ग्रन्थाः अनया रचिताः। अनया भाषया एव भासकालिदासादयः विश्वप्रसिद्धाः अभवन्। सर्वाः लिपयः अस्याः लेखनाय युज्यन्ते। किन्तु अधुना प्रायः देवनागरीलिपिः एव उपयुज्यते।

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु, वसुधैव कुटुम्बकम्, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी इत्यादीनि आप्तवाक्यानि मानविकतायाः उद्बोधकानि भवन्ति। अतः चिरपुरातनी एषा आर्षवाणी नित्यनूतनी एव।

भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती ॥



किं करणीयम् ?

- पाठभागम् उच्चैः वाचयतु ।
- पाठभागं पठित्वा संस्कृतभाषायाः नामान्तराणि चित्वा लिखतु ।
- पाठभागं पठित्वा तत्रस्थितानि मानविकताया उद्बोधकानि वाक्यानि लिखतु ।
- पाठभागं पठित्वा प्रश्नोत्तरकेलिं संचालयतु ।
- कोष्ठके प्रदत्तान् शब्दान् निर्देशानुसारं पट्टिकायां योजयतु ।

(कालिदासः, रामायणम्, कुमारसंभवम्, कर्णभारम्, व्यासः, भासः, महाभारतम्, वाल्मीकिः)

| कवयः | कृतयः |
|-----------|----------|
| वाल्मीकिः | रामायणम् |
| | |
| | |
| | |

- मञ्जूषातः पदानि चित्वा उदाहृतानुसारं पट्टिकां पूरयतु ।

(जननी, सन्ति, च, भाषा, अकुर्वन्, एवं, दिव्या, इति, भवति,

अपि, अतः, वेदः, असि, भासः)

| | नामपदानि | क्रियापदानि | अव्ययपदानि |
|-----|----------|-------------|------------|
| उदा | जननी | भवति | च |



● **उदाहरणानुसारं पदच्छेदं करोतु ।**

| | | |
|---------------|---|----------------|
| जन्मभूमिश्च | - | जन्मभूमिः + च |
| पुण्यभूमिश्च | - | + |
| सुखिनो भवन्तु | - | सुखिनः+ भवन्तु |
| प्रमुखो भवतु | - |+ |

अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नटम् | आङ्गलम् |
|----------------|--------------|-------------------------|--------------------|------------------------|
| असि | भवसि | ആകുന്നു | ಆಗಿರುವಿ | thou art |
| आप्तवाक्यानि | महद्वाक्यानि | മഹത്തുക്കളുടെ വാക്യങ്ങൾ | ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ವಾಕ್ಯಗಳು | authentic word-sayings |
| गरीयसी | महीयसी | മഹത്തരമായത് | ಹಿರಿದಾದ | greater |
| गीर्वाणभारती | संस्कृतभाषा | സംസ്കൃതഭാഷ | ಸಂಸ್ಕೃತಭಾಷೆ | Sanskrit language |
| चिरपुरातनी | अतिप्राचीना | വളരെ പഴക്കമുള്ളത് | ಬಹಳ ಹಳೆಯದಾದ | ancient |
| जन्मभूमिः | मातृभूमिः | മാതൃഭൂമി | ತಾಯ್ನಾಡು | motherland |
| जननी | माता | അമ്മ | ತಾಯಿ | Mother |
| दिव्या | देवसंबन्धिनी | അലൗകികമായ | ದಿವ್ಯವಾದ | Divine |
| नित्यनूतनी | सदा नवीना | എന്നും പുതുമയുള്ളത് | ಸದಾ ಹೊಸದಾದ | evergreen |
| पोषणम् | वर्धनम् | വളർത്തൽ | ಪೋಷಣೆಯನ್ನು | nourishing |
| विश्वप्रसिद्धः | लोकप्रशस्तः | ലോകപ്രശസ്തൻ | ವಿಶ್ವಪ್ರಸಿದ್ಧ | world famous |
| संस्कृतिः | संस्कारः | സംസ്കാരം | ಸಂಸ್ಕಾರ | culture |
| वाहिनी | नदी | നദി | ನದೀ | river |



धातुरूपाणि

अस् भुवि परस्मैपदी लट्

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|--------|-------|--------|-------|
| प्र.पु | अस्ति | स्तः | सन्ति |
| म.पु | असि | स्थः | स्थ |
| उ.पु | अस्मि | स्वः | स्मः। |

डुकृञ् करणे उभयपदी परस्मैपदे लङ् भूतकालः

| | ए.व | द्वि.व | ब.व |
|--------|--------|-----------|----------|
| प्र.पु | अकरोत् | अकुरुताम् | अकुर्वन् |
| म.प | अकरोः | अकुरुतम् | अकुरुत |
| उ.पु | अकरवम् | अकुर्व | अकुर्म। |

जीयात् - जि जये परस्मैपदी आशीर्लिङ्

| | | | |
|--------|--------|------------|----------|
| प्र.पु | जीयात् | जीयास्ताम् | जीयासुः। |
|--------|--------|------------|----------|

शब्दरूपाणि

दकारान्तः एतद् शब्दः(पुंसि) ।

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-----------|-------------|--------------|
| प्रथमा | एषः | एतौ | एते |
| द्वितीया | एतम्/एनम् | एतौ/एनौ | एतान्/ एनान् |
| तृतीया | एतेन/एनेन | एताभ्याम् | एतैः |
| चतुर्थी | एतस्मै | एताभ्याम् | एतेभ्यः |
| पञ्चमी | एतस्मात् | एताभ्याम् | एतेभ्यः |
| षष्ठी | एतस्य | एतयोः/एनयोः | एतेषाम् |
| सप्तमी | एतस्मिन् | एतयोः/एनयोः | एतेषु। |



दकारान्तः एतद् शब्दः(स्त्रियां) ।

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-------------|-------------|-----------|
| प्रथमा | एषा | एते | एताः |
| द्वितीया | एताम्/एनाम् | एते/ एने | एताः/एनाः |
| तृतीय | एतया/एनया | एताभ्याम् | एताभिः |
| चतुर्थी | एतस्यै | एताभ्याम् | एताभ्यः |
| पञ्चमी | एतस्याः | एताभ्याम् | एताभ्यः |
| षष्ठी | एतस्याः | एतयोः/एनयोः | एतासाम् |
| सप्तमी | एतस्याम् | एतयोः/एनयोः | एतासु । |

दकारान्तः एतद् शब्दः (क्लीबे) ।

| | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-----------|---------------------|-------------|
| प्रथमा | एतत् | एते | एतानि |
| द्वितीया | एतत्/एनत् | एते/एने | एतानि/एनानि |
| | | शेषं पुल्लिङ्गवत् । | |

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु ।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|--------------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | पाठभागः उच्चैः वाचितः । | | | | |
| 2. | संस्कृभाषायाः नामान्तराणि लिखितानि । | | | | |
| 3. | प्रश्नोत्तरकेली सञ्चालिता । | | | | |
| 4. | आप्तवाक्यानि सञ्चितानि । | | | | |
| 5. | कवीनां कृतीनां च पट्टिका पूरिता । | | | | |
| 6. | पदानि विविच्य पट्टिकायां योजितानि । | | | | |
| 7. | पदच्छेदः कृतः । | | | | |

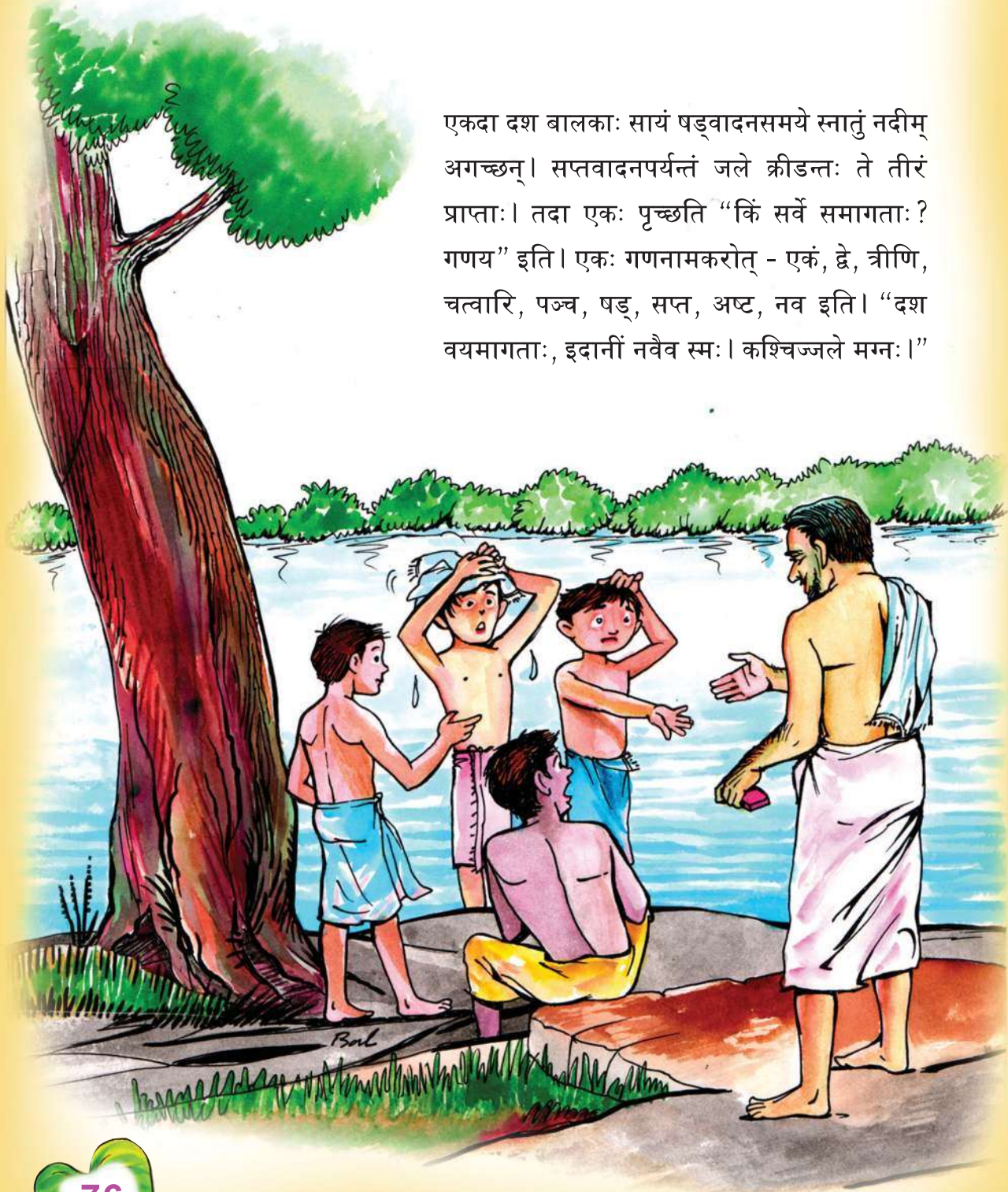
*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन



एकादशः पाठः दशमस्त्वमसि

एकदा दश बालकाः सायं षड्वादनसमये स्नातुं नदीम् अगच्छन्। सप्तवादनपर्यन्तं जले क्रीडन्तः ते तीरं प्राप्ताः। तदा एकः पृच्छति “किं सर्वे समागताः? गणय” इति। एकः गणनामकरोत् - एकं, द्वे, त्रीणि, चत्वारि, पञ्च, षड्, सप्त, अष्ट, नव इति। “दश वयमागताः, इदानीं नवैव स्मः। कश्चिज्जले मग्नः।”



अपरोऽपि एवमेव अगणयत्। गणनाकर्तारः आत्मानम् अगणयित्वा एव नव वयं, दशमः कुत्र? इति चिन्ताकुलाः जाताः। तदा स्नानाय आगतः कश्चित् ग्रामीणः तान् दुःखकारणमपृच्छत्। ते अवदन् “वयं दश आगताः, स्नानानन्तरं नवैव स्मः। एकः कुत्र गतः? इति वयं दुःखिताः”। तदा ग्रामीणः तानगणयत्। दश सन्तीति उक्तवान्। ततः सः बालकेषु अन्यं कमपि गणयितुम् आदिशत्। सोऽपि यथापूर्वम् आत्मानम् अगणयित्वा “नवैव” इत्यगणयत्। तदा स पुरुषः दशमस्त्वमसि इति तान् अबोधयत्।



किं करणीयम् ?

- दशपर्यन्तं संख्यायाः स्फोरकपत्रं सज्जीकरोतु, प्रदर्शयतु ।
- संख्यावाचकशब्दान् उच्चैः वदतु ।
- पाठभागात् भूतकालक्रियारूपाणि चित्वा लिखतु ।
- शतपर्यन्तं संख्यागणनक्रीडां संचालयतु ।
- त्रिंशत् पर्यन्तं संख्यावाचकशब्दान् पठित्वा लिखतु ।
- समयः कः इति वदतु ।

त्रिवादनम्



पादोनषड्वादनम्



सपादैकवादनम्



त्रिपादषड्वादनम्



सार्धद्विवादनम्



अनुबन्धः

शब्दकोशः

| पदम् | संस्कृतम् | कैरली | कन्नटम् | आङ्गलम् |
|-----------|---------------|-----------------|-----------------|-----------------|
| स्नातुम् | स्नानं कर्तुं | കുളിക്കുന്നതിന് | ಸ್ನಾನ ಮಾಡಲು | to bath |
| सुचिरम् | दीर्घसमयं | വളരെ നേരം | ಬಹುಕಾಲ | for a long time |
| प्राप्ताः | आगताः | എത്തിച്ചേർന്നു | ತಲುಪಿದರು | arrived |
| पृच्छति | प्रश्नं करोति | ചോദിക്കുന്നു | ಪ್ರಶ್ನಿಸುತ್ತಾನೆ | asks |
| गणना | गणनम् | എണ്ണൽ | ಎಣಿಕೆ | counting |
| इदानीम् | सम्प्रति | ഇപ്പോൾ | ಈಗ | now |
| मग्नः | निमग्नः | മുങ്ങിപ്പോയി | ತಲ್ಲೀನ | drowned |



| | | | | |
|----------|--------------|---------------|--------------|--------------|
| अपरः | इतरः | മറ്റൊരുവൻ | ಇನ್ನೊಬ್ಬ | other one |
| अगणयत् | गणयामास | എണ്ണി | ಎಣಿಸಿದನು | counted |
| तदा | तस्मिन् समये | അപ്പോൾ | ಆ ಸಮಯದಲ್ಲಿ | then |
| अवदन् | वदन्ति स्म | പറഞ്ഞു | ಹೇಳಿದರು | said |
| अपृच्छत् | पृच्छति स्म | ചോദിച്ചു | ಪ್ರಶ್ನಿಸಿದನು | asked |
| उक्तवान् | कथितवान् | പറഞ്ഞവൻ | ಹೇಳಿದನು | one who told |
| आदिदेश | आज्ञापयामास | നിർദ്ദേശിച്ചു | ಆಜ್ಞಾಪಿಸಿದನು | ordered |
| अबोधयत् | आवेदयत् | അറിയിച്ചു | ತಿಳಿಸಿದನು | informed |

किमधिगतम् ?

❖ पठनप्रवर्तनानि यथाकालं कृतानि चेत् साधुतासूचकचिह्नं (✓) करोतु।

| क्रम संख्या | प्रवर्तनानि | सम्यक् कृतम् | भागिकतया कृतम् | क्लेशनिर्देशः | परिहारबोधनम् (संख्यया सूच्यताम्)* |
|-------------|---------------------------------|--------------|----------------|---------------|-----------------------------------|
| 1. | स्फोरकपत्रप्रदर्शनं कृतम्। | | | | |
| 2. | संख्यावाचकशब्दाः उच्चैः उक्ताः। | | | | |
| 3. | भूतकालक्रियापदानि चितानि। | | | | |
| 4. | संख्यागणनक्रीडा चालिता। | | | | |
| 5. | संख्यावाचकशब्दाः लिखिताः। | | | | |
| 6. | समयः उक्तः। | | | | |

*

(१) अध्यापकस्य साहाय्येन (२)सुहृदः साहाय्येन (३) अन्येषां साहाय्येन

